राष्ट्रीय चेतना के स्वर.....

प्रस्तावना

किसी भी देश के युवकों में राष्ट्र–प्रेम की भावनाओं को कूट–कूट कर भरने में देश–भक्ति से ओत–प्रोत गीतों का महत्व निर्विवाद है। इतिहास साक्षी है कि द्वितीय विश्व–युद्ध के दौरान ऐसे ही गीतों ने यूरोपीय राष्ट्रों को हताशा से दूर रखा तथा स्वतंत्रता संग्राम में कितने ही भारतीय क्रान्ति वीरों ने ''मेरा रंग दे बसंती चोला'' जैसे गीतों का सस्वर गान करते हुए अपने प्राणों की आहुति दे दी। स्मरणीय है कि ऐसे गीतों की भूमिका केवल आपातकाल में न होकर सनातन रहती है ताकि देश का युवा वर्ग दिग्भ्रमित न होने पाये तथा देश पर आने वाले किसी भी संकट से जूझने के लिए सदैव तत्पर बना रहे। यही कारण है कि अपने राष्ट्र के प्रति समर्पित भारत विकास परिषद् अखिल भारतीय स्तर पर **राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता** का आयोजन करती रही है। दृष्टव्य है कि अपने भाव दूसरों तक पहुँचाने का सशक्त माध्यम संगीत है। देशभक्ति से ओत–प्रोत गीतों का समूहगान गायकों एवं श्रोताओं में राष्ट्रभक्ति की उदात्त भावनाओं का संचार तो करता ही है, उन्हें अनुशासित व्यवहार के लिए भी प्रेरित करता है। इस महान् लक्ष्य की प्राप्ति के लिए परिषद् ने 'राष्ट्रीय चेतना के स्वर' के पुस्तक के ओजस्वी हिन्दी एवं संस्कृत गीतों को केन्द्र–बिन्दु बनाया है तथा प्रतियोगिता के माध्यम से भारत के सभी हिन्दी व अहिन्दी भाषी राज्यों को एकसूत्र में पिरोने की चेष्टा भी की है। प्रतियोगिता की भाषा हिन्दी एवं संस्कृत होने के कारण राष्ट्रीय एकात्मता का भाव इसमें सजहरुपेण स्फूर्त होता है। यही इस उपक्रम का एक मुख्य उद्देश्य भी है।

प्रतिवर्ष इस प्रतियोगिता में देशभर के लगभग 5000 से अधिक विद्यालय व 3.30 लाख से अधिक विद्यार्थी भाग लेते हैं। पिछले वर्षों में भारत के राष्ट्रपति डॉ. जाकिर हुसैन, श्री ज्ञानी जैल सिंह, श्री नीलम संजीव रेड्डी व श्री रामनाथ कोविन्द ने मुख्य अतिथि के रूप में राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता की शोभा बढ़ाई। भारत विकास परिषद् का यह उपक्रम शाखा स्तर से ही प्रारंभ हो जाता है। प्रतियोगिताओं के बाद शाखाओं की सबसे अच्छी टोलियों को प्रान्त स्तर की प्रतियोगिता में भेजा जाता है, जहाँ प्रान्त की सर्वश्रेष्ठ टोलियाँ रीजन स्तर एवं रीजन स्तर की सर्वश्रेष्ठ टोली राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता में भाग लेती हैं। अंततः प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाली टोलियों को भव्य समारोह में पुरस्कृत किया जाता है।

आज जब पश्चिमी आदर्शों एवं जीवन–पद्धति के अंधानुकरण की दौड़ में युवा–भारत के हृदय में राष्ट्रीय भावनाएँ धूमिल पड़ती जा रही हैं तब इस विशिष्ट प्रकार की समूहगान प्रतियोगिता का महत्व स्वयं स्पष्ट है। भारत विकास परिषद् का यह प्रकल्प भारत माता के श्री चरणों में एक अकिंचन भेंट है।

–दुर्गा दत्त शर्मा,
राष्ट्रीय महामंत्री
भारत विकास परिषद्

भारत विकास परिषद् : एक परिचय

भारत का इतिहास श्रद्धा, त्याग और साधना की कहानी है। वैदिक काल से हमारा यह विश्वास रहा है कि समाज और व्यक्ति का संबंध अटूट है। इसलिए आजादी के पश्चात् समर्थ राष्ट्र के निर्माण के लिए सशक्त समाज की आवश्यकता को ध्यान में रखकर ''भारत विकास परिषद्'' जैसी संस्था की परिकल्पना सामने आई। वास्तव में भारत विकास परिषद् समाज के कुछ प्रबुद्ध और राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत सक्षम व्यक्तियों के आचार–विचार का जीवन्त एवं व्यवहारिक परिणाम है। यह एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक संगठन है जो सर्व धर्म संभाव और विश्वबन्धुत्व के आदर्श के प्रति समर्पित है। समाज के नैतिक और आध्यात्मिक उत्थान के प्रति कार्यरत यह संस्था भारतीय संस्कृति के आधार पर भारत के विकास के लिए प्रतिबद्ध है। स्वामी विवेकानंद जी के विचारों से प्रेरणा लेकर समाज के विचारशील, समर्पित एवं उत्साही व्यक्तियों द्वारा 1963 में भारत विकास परिषद् की स्थापना की गई। दिल्ली के लाला हंसराज गुप्ता एवं डॉ. सूरज प्रकाश ने इस संस्था की नींव रखी। सुप्रसिद्ध लेखिका महादेवी वर्मा परिषद् की आजीवन संरक्षिका रहीं। भारत विकास परिषद् की आस्था मातृभूमि के प्रति समर्पण और भारतीय जीवन मूल्यों पर आधारित है। इन मूल्यों के आधार पर इसकी छवि एवं पहचान पूरे देश में बन रही है। मानवीय मूल्यों के प्रति आस्था, विचारों की स्वतंत्रता, सर्व सहमति, एकात्मकता, समरसता, सत्य, त्याग एवं समर्पण जैसे मानवीय मूल्यों के प्रति अगाध श्रद्धा एवं अनुकरणीय आचरण ही इस संस्था के लिए मार्ग दर्शक एवं दिशा निर्देश हैं। इन्हीं मूल्यों के संवर्धन के लिए सम्पर्क, सहयोग, संस्कार, सेवा एवं समर्पण ये पाँच ध्येय पूर्ण प्रेरक तत्व इसके अविभाज्य अंग बन गए हैं। 1963 में दिल्ली से प्रारंभ एक शाखा से अब देश–विदेश में इसकी 1483 शाखाओं का विशाल जाल फैला हुआ है। इसके 64785 से अधिक सदस्य–परिवार, निःस्वार्थ सामाजिक सेवा कार्यों में जुटे हैं। भारत विकास परिषद् के प्रमुख प्रकल्पों को दो भागों में बांटा जा सकता है।

संस्कार

1. **राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता** : देश भक्ति के गीतों की यह प्रतियोगिता सर्व प्रथम वर्ष 1967 में आयोजित की गई थी। देश भक्ति से परिपूर्ण इस प्रतियोगिता ने ही वास्तव में छात्रों के मध्य भारत विकास परिषद् को लोकप्रियता दिलाई और पहचान बनाई। इसमें प्रतिवर्ष भारत के सभी प्रान्तों से लगभग 5,000 से अधिक विद्यालयों के छात्र भाग लेते हैं। गत वर्षों में भारत के राष्ट्रपति डॉ. ज़ाकिर हुसैन, श्री ज्ञानी ज़ैल सिंह व श्री नीलम संजीव रेड्डी, श्री रामनाथ कोविन्द ने मुख्य अतिथि के रूप में इन कार्यक्रमों की शोभा बढ़ाई है। वर्ष 2015 से पूर्व संस्कृत गीतों की प्रतियोगिता अलग से आयोजित होती थी। अब इस प्रतियोगिता के अन्तर्गत हिन्दी व संस्कृत दोनों में देशभक्ति के गीतों का गायन सम्मिलित है।
2. **भारत को जानो प्रतियोगिता** : इस प्रतियोगिता का उद्देश्य स्कूली छात्रों में अपने देश, संस्कृति तथा धर्म के विषय में जानकारी बढ़ाना है। इस प्रतियोगिता के लिये सम्पूर्ण देश में प्रतिवर्ष दो लाख से अधिक हिन्दी व अंग्रेजी भाषा में 'भारत को जानो' पुस्तकें

विद्यार्थियों में वितरित की जाती हैं व लाखों छात्र इस प्रतियोगिता में भाग लेते हैं ।

3. **गुरु वंदन छात्र अभिनंदन** : इस कार्यक्रम कें अन्तर्गत परिषद् के सदस्य विद्यालयों में जाते हैं, शिक्षकों के प्रति आभार व्यक्त करते हैं तथा प्रतिभाशाली छात्रों का सम्मान करते हैं। 11 अप्रैल से 15 अक्टूबर तक की अवधि में यह कार्यक्रम आयोजित किया जाता है। प्रतिवर्ष 7000 विद्यालयों के लगभग 15 लाख विद्यार्थी इस कार्यक्रम में भाग लेते हैं ।
4. **बाल, युवा, परिवार व प्रौढ़ संस्कार योजना** : प्रति वर्ष हजारों बालक/बालिकायें परिषद् द्वारा आयोजित बाल संस्कार शिविरों में भाग लेते हैं। विद्यालयों के छात्रों को लगभग एक सप्ताह तक इन शिविरों में उपदेश, योग, खेल तथा देश भक्ति एवं धर्मिक गीतों के माध्यम से संस्कार प्रदान किए जाते हैं। इसके साथ ही युवाओं, परिवारों एवं वरिष्ठ नागरिकों के लिए भी संस्कार शिविरो का आयोजन किया जाता है।
5. **गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस** : गुरु तेग बहादुर बलिदान दिवस के अवसर पर भारत विकास परिषद् अनेक वर्षों से सभाओं एवं प्रदर्शनियों का आयोजन कर महान सिख गुरु के प्रति आदर व सम्मान प्रदर्शित करती है।

सेवा कार्य

1. **दिव्यांग सहायता एवं पुनर्वास योजना** : आज समूचे देश में 14 विकलांग सहायता केन्द्र कार्य कर रहे हैं। इन दिव्यांग केन्द्रों के माध्यम से प्रतिवर्ष लगभग 25,000 दिव्यांग बन्धुओं को कृत्रिम अंग निःशुल्क प्रदान किये जाते हैं।
2. **वनवासी सहायता योजना** : भारत विकास परिषद् देश के 8 करोड़ वनवासी बन्धुओं की सहायता हेतु अधिक प्रयत्न कर रही हैं। परिषद् ने इनके लिए अस्पताल, विद्यालय, पुस्तकालय, व्यावसायिक शिक्षा केन्द्र इत्यादि प्रारम्भ करने में सहायता प्रदान करने हेतु प्रयत्नशील है।
3. **ग्राम/बस्ती विकास योजना** : इस योजना के अन्तर्गत शहरों में स्थित मलिन बस्तियों तथा ग्रामों में सेवा कार्य किये जाते हैं। अनेक ग्रामों तथा मलिन बस्तियों में परिषद् द्वारा सेवा कार्य चल रहें हैं। समन्वित ग्राम विकास के लिए परिषद् ने 19 राज्यों के 72 गांवों को गोद लिया हैं। इनमें से ग्राम मुहब्बतपुर जिला हिसार (हरियाणा) ने 2008 में राष्ट्रपति पुरस्कार अर्जित किया हैं।
4. **पर्यावरण (हरा–भरा भारत)**: प्रतिवर्ष लाखों पौधे लगाये जाते है। शहरों तथा उप नगरों मे तुलसी तथा नीम के पौधों का वितरण नियमित रूप से किया जाता हैं। इसके अतिरिक्त प्लास्टिक के उपयोग को रोकने के प्रयत्न किए जा रहें हैं ।
5. **स्वास्थ्य** : भारत विकास परिषद् ने सम्पूर्ण देश में स्थाई रूप से अनेक चिकित्सालय, रक्त बैंक, एम्बुलेंस इत्यादि का प्रबन्ध किया हैं। समय–समय पर शाखाएँ योग शिविर, रक्तदान शिविर तथा अन्य प्रकार के चिकित्सा सहायता शिविरों का आयोजन करती हैं।
6 **सामूहिक सरल विवाह** : परिषद् निर्धन लड़कों तथा लड़कियों के लिए सामूहिक विवाह का आयोजन करती है । प्रतिवर्ष लगभग 400 निर्धन युगलों के विवाह की व्यवस्था की जाती हैं ।

राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता

विगत कई वर्षों से भारत विकास परिषद् पूरे भारतवर्ष में विद्यालय स्तर पर देशभक्ति गीतों की प्रतियोगिता आयोजित करती आ रही है। इसका मुख्य उद्देश्य नागरिकों में देशभक्ति की भावना जागृत करना और नैतिक मूल्यों का विकास करना है, जो कि आज के समय की महत्ती आवश्यकता है।

प्रतियोगिता का स्वरूप एवं नियम :

क. **भाग लेने वाली टीम के लिए आवश्यक बिन्दु** : यह प्रतियोगिता तीन भाषाओं में आयोजित की जायेगी (हिन्दी, संस्कृत और प्रादेशिक भाषा–लोकगीत) साथ ही चार विभिन्न स्तरों पर इसका आयोजन होगा–शाखा, प्रान्त, रीजन एवं राष्ट्र। प्रत्येक **भाषा के लिए प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिये जाऐंगे,** लेकिन हर एक स्तर के बाद अगले स्तर पर हिस्सा लेने के लिए केवल वहीं टीम योग्य मानी जाएगी जिसके **हिन्दी एवं संस्कृत दोनों गीतों की प्रतियोगिता** के अंकों का योगफल ज्यादा होगा।

1. **शाखा स्तर** – शाखा स्तर पर उस शाखा के कार्य क्षेत्र में स्थित कोई भी विद्यालय इस प्रतिस्पर्धा में भाग ले सकता है।
2. **प्रान्त स्तर** – उस प्रान्त की प्रत्येक शाखा केवल एक ही टीम को प्रान्त स्तर के राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता में भेज सकती है जिसने कि हिन्दी और संस्कृत गान के अंकों को जोड़कर कुल अधिकतम अंक प्राप्त किये हैं।
3. **रीजनल स्तर** – हर एक प्रान्त केवल एक टीम को ही रीजनल राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता में भेज सकती है जिसने कि हिन्दी और संस्कृत गान के अंकों को जोड़कर कुल अधिकतम् अंक प्राप्त किये हैं।
4. **राष्ट्रीय स्तर** – प्रत्येक रीजन केवल एक ही टीम (जिसने कि हिन्दी और संस्कृत गान के अंकों को जोड़कर कुल अधिकतम अंक प्राप्त किये हैं) को राष्ट्रीय स्तर के राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता में भेज सकती है।

ख. **प्रतियोगिता के नियम** – निम्नलिखित नियम सभी स्तर (शाखा, प्रान्त, रीजन और राष्ट्र) पर समान रूप से लागू होंगे।

1. **विद्यालयों की पात्रता** – संगीत विद्यालय के अतिरिक्त सभी विद्यालय इस प्रतियोगिता में भाग ले सकते हैं।
2. **प्रत्येक टीम तीनों भाषाओ** (हिन्दी, संस्कृत और प्रादेशिक भाषा) का एक–एक गीत प्रस्तुत कर सकती है।
3. **विद्यालय की पहचान** – गीतों की प्रस्तुति देते समय विद्यार्थी किसी भी तरह की पोशाक पहन सकते हैं, लेकिन विद्यालय के लोगों (बैज) विल्ला, टाई आदि जिसके द्वारा विद्यालय की पहचान प्रदर्शित हो उसका उपयोग करना मना है। प्रत्येक टीम के साथ कम से कम एक शिक्षक का होना अनिवार्य है।
4. **गायकों की पात्रता एवं योग्यता** – प्रत्येक टीम में छठी से बारहवीं कक्षा के 6 से 8 (लड़के और लड़कियों) विद्यार्थी प्रतियोगिता में सहभागी हो सकते हैं

5. **गीतों का चयन** – हिन्दी एवं संस्कृत गीतों के गायन के लिए भारत विकास परिषद् द्वारा प्रकाशित पुस्तक ''राष्ट्रीय चेतना के स्वर'' में से कोई भी गीत चुनकर उसका गायन कर सकते है। लेकिन गीत का कोई शब्द छूटना नहीं चाहिए। उनका मूल स्वरूप ही मान्य होगा अर्थात् पूरा गीत गान अनिवार्य है।

लोकगीत प्रतियोगिता के लिए किसी भी प्रदेश की प्रादेशिक भाषा का कोई गीत चुनकर प्रस्तुति की जा सकती है, लेकिन गीत का हिन्दी या अंग्रेजी अनुवाद टीम पंजीयन के समय आयोजकों को उपलब्ध कराना होगा। ये गीत देशभक्ति/संस्कृति के विचारों से ओतप्रोत होना चाहिए।

6. **वाद्य यंत्रों का उपयोग** – प्रत्येक टीम के साथ अधिकतम तीन (3) वादक हो सकते हैं। एक वादक एक से ज्यादा वाद्य यंत्र बजा सकता है। बिजली और बैटरी से चलने वाला कोई भी वाद्य यंत्र मान्य नहीं होंगे। प्रत्येक टीम को अपने स्वयं के वाद्य यंत्र प्रयोग में लाने होंगे।

7. **गीत की समयावधि** – प्रत्येक टीम को गीत गायन प्रतियोगिता के लिए 7 (सात) मिनट का समय अपने समूहगान प्रदर्शन के लिए दिया जाएगा एवं इस अवधि की गणना गीत या संगीत जो कि पहले आरंभ हो उससे की जाएगी।

8. **गीत का भाव प्रदर्शन** – हिन्दी एवं संस्कृत गीत के प्रस्तुतिकरण के समय गीत के भावानुसार अपने स्थान पर खड़े रहकर शरीर के हाव–भाव प्रदर्शन की अनुमति है। मात्र लोकगीत की प्रतियोगिता में स्थान बदल सकते हैं।

9. **सभी प्रतिभागी टीमों** के लिए 'पुरस्कार वितरण समारोह' में उपस्थित रहना अनिवार्य है।

ग. **आंकलन के नियम** – अधिकतम अंक संख्या 100 होगीं ये अंक निम्न रूप से 20–20 अंकों में बांटे जाएंगे। संगीत–संयोजना, स्वर, ताल, उच्चारण एवं प्रस्तुतिकरण का ढंग।

घ. **सामान्य निर्देश** :

1. **पंजीयन शुल्क** – राष्ट्रीय स्तर पर राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगता के लिए पंजीयन शुल्क रुपये 1000/– होगा। शाखा स्तर, प्रान्त स्तर एवं रीजन स्तर की राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता के लिए पंजीयन शुल्क निर्धारण भारत विकास परिषद् के संबंधित आयोजकों द्वारा किया जायेगा।

2. **गीत प्रस्तुति के क्रम** – प्रतियोगिता के कुछ समय पूर्व सभी टीमों के प्रमुख/शिक्षक को एक विशेष बैठक में बुलाया जाएगा, जिसमें आयोजन समिति द्वारा सभी के सामने प्रस्तुति के क्रम आदि का निर्णय ड्रा द्वारा लिया जाएगा, जो कि तीनों गीतों की प्रस्तुति के लिए एक ही क्रम होगा। संयोजक का निर्णय अंतिम और सभी के लिए एक होगा।

3. **निर्णायक मंडल की नियुक्ति** – निर्णायक मंडल में अनुभवी संगीतज्ञ, कला विशेषज्ञ व भाषाविद होंगे। परिषद् द्वारा नियुक्त निर्णायकों का निर्णय अंतिम व सर्वमान्य होगा।

4. **मंच व्यवस्था** –

(i) मंच पर **5 माइक गीत प्रस्तुतिकरण हेतु व 2 माइक** वादकों को उपलब्ध करवाए जाएंगे।

(ii) मंच पर वादकों व गायकों की सुविधा के लिए 2 मोनिटर उपलब्ध करवाए जायेंगे।

5. **निर्णायकों के बैठने की व्यवस्था** – तीनों निर्णायकों के बैठने की व्यवस्था अलग–अलग होगी। जैसे कि एक मंच के सामने, दूसरे मंच के दाईं ओर एवं तीसरे मंच के बायीं ओर।

6. भारत विकास परिषद् की आयोजन समिति का राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता से संबंधित किसी भी विषय में निर्णय लेने का पूर्ण अधिकार होगा।

7. प्रतियोगिता की विजेता टोलियों के लिए अलग–अलग पुरस्कार होंगे। इन प्रतियोगि. ताओं में भाग लेने वाले प्रत्येक प्रतिभागी को भारत विकास परिषद् द्वारा सहभागिता प्रमाण पत्र दिया जाएगा।

8. शाखाओं/प्रान्तों/रीजनों से आने वाली टोलियों के आने जाने का किराया व संबंधित व्यय स्वयं वहन करना होगा।

9. शाखाओं, प्रान्तों व रीजन से आने वाली विभिन्न टोलियों के खाने व रहने की निःशुल्क व्यवस्था आयोजक करेंगे।

ड़. राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता के विशेष पुरस्कार

1. **अधिकतम सहभागिता पुरस्कार** – यह पुरस्कार उस शाखा को देय होगा जिसकी शाखा स्तर की राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता में अधिकतम विद्यालय सहभागिता देंगे। यह पुरस्कार प्रान्त स्तरीय राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता के आयोजन के समय देय होगा

2. **देशभक्ति गीतों का प्रतिदिन विद्यालय में गायन** – यह पुरस्कार उस शाखा को देय होगा जिस शाखा के प्रयासों के द्वारा अधिकतम विद्यालयों में प्रतिदिन 'राष्ट्रीय चेतना के स्वर' पुस्तक में संकलित गीतों में से कोई गीत अपनी नियमित प्रार्थना में गाया जाएगा। यह पुरस्कार प्रान्त स्तरीय समूहगान प्रतियोगिता आयोजन के समय शाखा को दिया जाएगा।

3. **देशभक्ति गीत का महासमूह गायन पुरस्कार** – यह पुरस्कार देश भर की उस शाखा को देय होगा जिसने किसी राष्ट्रीय पर्व 15 अगस्त एवं महापुरुषों की जयन्तियों पर महासमूहगान का आयोजन नवम्बर माह के अन्त तक हो, (न्यूनतम सहभागिता 1000 विद्यार्थी)। पूरे देश में जिस शाखा द्वारा अधिकतम सहभागिता से इस महासमूह गायन आयोजन किया जाएगा उस शाखा को राष्ट्रीय स्तर की 'राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता' के दौरान पुरस्कृत किया जाएगा। जिसके अन्तर्गत अध्यक्ष, सचिव, वित्त सचिव और कार्यक्रम समन्वयक का सम्मान करते हुए पुरस्कार दिया जाएगा।

विशेष : इस सन्दर्भ में विस्तृत सूचना, नियम, आधार इत्यादि का विस्तृत विवरण केन्द्रीय कार्यालय व राष्ट्रीय प्रकल्प चेयरमैन राष्ट्रीय समूहगान प्रतियोगिता के पास उपलब्ध रहेगा।

NATIONAL GROUP SONG COMPETITION

Since last many years Bharat Vikas Parishad has been organizing group song competitions of patriotic songs for schools all over India. Main aim of this event is to inculcate patriotism and moral values in the masses in general and in the students in particular which is an acute need of the hour.

RULES & REGULATIONS FOR NGSC:

A) CRITERIA FOR THE PARTICIPATING TEAMS : Competitions of NGSC programme will be held in three different Categories (languages) Viz. Hindi, Sanskrit & Pradeshik Language (folk Song) at all levels i.e. Branch, Prant, Region & National.

There will be three prizes viz first, second & third for performance in each category. But, only that team will be eligible to enter the higher level round of NGSC whose aggregate total marks of Hindi and Sanskrit are maximum.

1) Branch Level NGSC : At Branch Level, any school within the area of that Branch can participate in competitions.

2) Prant Level NGSC : Each branch from that Prant will send one team of a school for Prantiya Level NGSC whose aggregate total marks of Hindi and Sanskrit Songs are maximum.

3) Regional Level NGSC : Each Prant from that Region will send one team of a school for Regional Level NGSC whose aggregate total marks of Hindi and Sanskrit Songs are maximum.

4) National Level NGSC : Each Region will send one team of a school for National Level NGSC whose aggregate total marks of Hindi and Sanskrit Songs are maximum.

B) Rules for NGSC : These rules are applicable for NGSC Competitions at all Levels (Branch, Prant, Region & National.)

1) Eligibility of Schools : Any school can participate in this competition except music school (Sangeet Vidhyalaya).

2) Each team can present three songs, Hindi, Sanskrit & Prantiya Language (Folk Song) i.e. one song from each language only.

3) Identity of the School : Participants may wear any type of dress at the time of presentation. Teams should not disclose the identity or name of their respective school while presenting the song by any means such as badge or logo.

At least 1 (One) teacher from each school must accompany the team.

4) Eligibility of Singers & Number of Participants : Students from the classes of 6th standard to 12th standard can participate in this competition. Each team shall consist of 6 to 8 students (including boys and girls).

5) **Selection of Songs :** Any one song from "Rashtriya Chetna Ke Swar" published by Bharat Vikas Parishad can be presented. Full song without leaving any part or words should be presented for Hindi and Sanskrit songs competitions.

   For Folk Song Competition any song in their respective Prantiya Language will be selected by the team and a copy of the song with its translation in Hindi or English should be given to the organisers of the event at the time of registration. This Song should have a cultural patriotic sense & meaning.

6) **Use of Instruments :** Instrumentalists with each team should not be more than 3 (Three). One Instrumentalist can operate or play more than one instrument simultaneously. Instruments which are electrically or battery operated are not allowed. Participating teams will bring their own musical instruments.

7) **Duration of the Song :** Presentation of the song should be completed within 7 (Seven) minutes. The time shall be counted from the start of the music or the words of the song whichever is earlier.

8) **Movement and Actions :** During the presentation of Hindi and Sanskrit songs singers can express the emotions of the song by the movement of hands and feet but should not leave their place where they stand. During the presentation of Folk Songs participants are allowed to move from their places.

9) It is absolutely compulsory for all participating teams to attend the prize distribution function.

C) CRITERIA OF MARKS :

Maximum marks 100 will be equally divided into 5 parts of 20 each for music composition, Swar, Taal, Pronunciation and presentation.

D) GENERAL GUIDLINES :

1) **Registration Fee:** Registration Fee for finals of NGSC is Rs. 1000/- (One Thousand Only) for every teams.

   Amount of Registration Fee for Branch Level, Prant Level & Regional Level NGSC can be decided by the concerned host body of Bharat Vikas Parishad.

2) **Allotment of Team Numbers:** Before start of the programme, there will be a special meeting of the leaders/teachers of various teams in which a draw will be conducted for allotment of team numbers to each school.

3) **Appointment of Judges :** Judges will be eminent persons in the field of Art, Music, Language etc. and their decision will be final and binding on all.

4) Stage Arrangements:

a) There will be five mics for singers & two mics for instruments.

b) Two monitors will be provided on stage.

5) Sitting Arrangement of Judges : Sitting Arrangement of the Judges will be at three different places viz. Center, left & right infront of the stage.

6) The organizing committee of BVP will be fully empowered to take decision in any matter related to NGSC.

7) Prizes will be awarded to the winning teams. Each participant of all teams will be given a certificate of performance by Bharat Vikas Parishad.

8) Travelling and other related expenses are to be borne by branches, Prants and Regions or the participating teams themselves.

9) Lodging and Boarding arrangements will be provided free of costs by the organisers for all teams coming from various Branches, Prant and Region.

E) Special Prizes for NGSC :

1) Maximum Participation Prize : This prize will be given to a Branch in which maximum no. of schools have participated in NGSC. This prize will be given in the Event of Prant Level NGSC Programme.

2) Prize For Daily Singing of Patriotic Song in a School : This prize will be given to a Branch of which one or more school are practicing daily singing of a Patriotic Song from the book 'Chetana Ke Swar' along with their regular prayer (Prarthana). Prize will be given to Branch in which maximum no. of school follow this practice. This prize will be given in the Event of Prant Level NGSC Programme.

3) Prize For Mega Event of Group Song: This prize will be given to a Branch from all over India who will organize a programme of Group Song in which maximum no. of students will participate (atleast 1000 students) at a big ground in a City on any National Day (such as 15th August or any birth anniversary (Jayanti) of any National Leader) before the end of November. This prize will be given to a winning team in a National Level NGSC Programme.

The President, Secretary, Treasurer and the Convenor of the programme will be felicitated while handing over the prize.

Note : Detailed information, rules, criteria, etc. will be available at the Central Office of BVPèNational Project Chairman of NGSC.

हिन्दी-गीत

विषयानुक्रमणिका

गीत संख्या	पृ. सं	गीत संख्या	पृ. सं
1. देश हमें देता है सब कुछ	11	30. निर्माणों के पावन युग में	40
2. हम करें राष्ट्र आराधन	12	31. हमको है अभिमान देश का	41
3. धरती की शान	13	32. राष्ट्र की जय चेतना	42
4. आँधी क्या है तूफान मिलें	14	33. कभी न रोक सकें	43
5. एक–एक पग बढ़ते जाएँ	15	34. संगठन गढ़े चलो	44
6. क्रांति की मशाल से	16	35. न यह समझो कि हिन्दुस्तान की	45
7. नदिया न पीये	17	36. यह अमर शहीदों की धरती	46
8. कोटि–कोटि कण्ठों ने गाया	18	37. चलो जवानो, बढ़ो जवानों	47
9. सूरज बदले चंदा बदले	19	38. सोने जैसी माटी इसकी	48
10. अब जाग उठो कमर कसो	20	39. देश जागे देश जागे	49
11. लक्ष्य तक पहुँचे बिना	21	40. सागर वसना पावन देवी	50
12. फिर आज भुजाएँ फड़क उठीं	22	41. चलें चलें हम निशिदिन अविरत	51
13. जिसने मरना सीख लिया है	23	42. आज तन मन और जीवन	52
14. मन समर्पित तन समर्पित	24	43. ध्येय मार्ग पर चले बीर तो	53
15. हम बंगाली हम पंजाबी	25	44. एक नया इतिहास रचें हम	54
16. स्वतंत्रता को सार्थक करने	26	45. हम आजादी के रखवाले	55
17. चल पड़े पैर जिस ओर	27	46. हमे फिर से धरा पर	56
18. भारत माँ का मान बढ़ाने	28	46. राष्ट्र भक्ति ले हृदय में	57
19. गीत खुशी के	29	48. सबसे उँची विजय पताका	58
20. अपनी धरती अपना अंबर	30	49. तरुण वीर देश के	59
21. अब तक सुमनों पर चलते थे	31	50. जाग उठा है आज देश का	60
22. भारत वन्दे मातरम्	32	51. अरुण गगन पर	61
23. अनेकता में एकता	33	52. भारत हमारी माँ है	62
24. भारत माँ की संताने	34	53. देश उठेगा	63
25. संग्राम जिन्दगी है	35	54. गौरवशाली परम्परा	64
26. रक्त शिराओं में राणा का	36	55. कदम मिलाकर	65
27. जननी जन्मभूमि	37	56. चले निरन्तर साधना	66
28. युगों–युगों से यही	38	57. जीवन में आनन्द	67
29. यह उथल–पुथल	39	58. विश्व सुमंगल...	68

1. देश हमें देता है सब कुछ

देश हमें देता है सब कुछ,
हम भी तो कुछ देना सीखें।।

सूरज हमें रोशनी देता,
हवा नया जीवन देती है,
भूख मिटाने को हम सबकी,
धरती पर होती खेती है,
औरों का भी हित हो जिसमें,
हम ऐसा कुछ करना सीखें।। 1।।

पथिकों को तपती दुपहर में,
पेड़ सदा देते हैं छाया,
सुमन सुगंध सदा देते हैं,
हम सबको फूलों की माला,
त्यागी तरुओं के जीवन से,
हम परहित कुछ करना सीखें।। 2।।

जो अनपढ़ हैं उन्हें पढ़ायें,
जो चुप हैं उनको वाणी दें,
पिछड़ गये जो उन्हें बढ़ायें,
प्यासी धरती को पानी दें,
हम मेहनत के दीप जलाकर,
नया उजाला करना सीखें।। 3।।

विश्वास और धैर्य उन्नति का मार्ग है।

2. हम करें राष्ट्र आराधन

हम करें राष्ट्र-आराधन, हम करें राष्ट्र-आराधन,
तन से, मन से, धन से, तन-मन-धन जीवन से
हम करें राष्ट्र आराधन।।

अंतर से मुख से कृति से, निश्चल हो निर्मल मति से,
श्रद्धा से मस्तक नत से, हम करें राष्ट्र अभिवादन।। 1।।

अपने हँसते शैशव से, अपने खिलते यौवन से,
प्रौढ़तापूर्ण जीवन से, हम करें राष्ट्र का अर्चन।। 2।।

अपने अतीत को पढ़कर, अपना इतिहास उलटकर,
अपना भवितव्य समझकर, हम करें राष्ट्र का चिंतन।। 3।।

हमने ही उसे दिया था, सांस्कृतिक उच्च सिंहासन,
माँ जिस पर बैठी सुख से, करती थी जग का शासन,
अब कालचक्र की गति से, वह टूट गया सिंहासन
अपना तन-मन-धन देकर हम करें पुनः संस्थापन।। 4।।

मनुष्य ग़लतियों से ही सीखता है।

3. धरती की शान

धरती की शान तू भारत की संतान,
तेरी मुट्ठियों में बंद तूफान है रे,
मनुष्य तू बड़ा महान है।।

तू जो चाहे पर्वत पहाड़ों को फोड़ दे,
तू जो चाहे नदियों के मुख को भी मोड़ दे,
तू जो चाहे माटी से अमृत निचोड़ दे,
तू जो चाहे धरती को अम्बर से जोड़ दे,
अमर तेरे प्राण, मिला तुझको वरदान
तेरी आत्मा में स्वयं भगवान है रे।। 1।।

नयनों में ज्वाल, तेरी गति में भूचाल,
तेरी छाती में छिपा महाकाल है,
पृथ्वी के लाल तेरा हिमगिरि सा भाल,
तेरी भृकुटि में तांडव का ताल है,
निज को तू जान, ज़रा शक्ति पहचान
तेरी वाणी में युग का आह्वान है रे।। 2।।

धरती सा धीर, तू है अग्नि सा वीर,
तू जो चाहे तो काल को भी थाम ले,
पापों का प्रलय रुके, पशुता का शीश झुके,
तू जो अगर हिम्मत से काम ले,
गुरु सा मतिमान, पवन सा तू गतिमान,
तेरी नभ से भी ऊँची उड़ान है रे।। 3।।

निरंतरता ही सफलता की कुंजी है।

4. आँधी क्या है तूफान मिलें

आँधी क्या है तूफान मिलें, चाहे जितने व्यवधान मिलें,
बढ़ना ही अपना काम है, बढ़ना ही अपना काम है।।

हम नई चेतना की धारा, हम अंधियारे में उजियारा,
हम उस बयार के झोंके हैं, जो हर ले जग का दु:ख सारा,
चलना है शूल मिलें तो क्या, पथ में अंगार जलें तो क्या,
जीवन में कहाँ विराम है, बढ़ना ही अपना काम है।। 1।।

हम अनुगामी उन पाँवों के, आदर्श लिए जो बढ़े चले,
बाधाएँ जिन्हें डिगा न सकीं, जो संघर्षों में अड़े रहे,
सिर पर मंडरता काल रहे, करवट लेता भूचाल रहे,
पर अमिट हमारा नाम है, बढ़ना ही अपना काम है।। 2।।

वह देखो पास खड़ी मंजिल, इंगित से हमें बुलाती है,
साहस से बढ़ने वालों के, माथे पर तिलक लगाती है,
साधना न व्यर्थ कभी जाती, चलकर ही मंजिल मिल पाती,
फिर क्या बदली क्या घाम है, बढ़ना ही अपना काम है।। 3।।

अवसर ढूँढने वालों को ही सफलता मिलती है।

5. एक-एक पग बढ़ते जाएं

एक-एक पग बढ़ते जाएँ,
बल-वैभव का युग फिर लायें।।

जन-जन की आंखों में जल है,
भारत माता आज विकल है,
आज चुनौती हम पुत्रों को,
जिसमें राष्ट्र-प्रेम अविचल है,
अपना जीवन धन्य इसी में,
मुरझाये मुख कमल खिलायें।।1।।

बिखरे सुमन पड़े हैं अगणित,
स्नेह सूत्र में कर लें गुम्फित,
माता के विस्मृत मंदिर को,
मधुर गंध से कर दें सुरभित,
जननी के पावन चरणों में,
कोटि सुमन की माला चढ़ायें।।2।।

कोटि जनों की संघ शक्ति हो,
सब हृदयों में राष्ट्रभक्ति हो,
कोटि बढ़ें पग एक दिशा में,
सबके मन में एक युक्ति हो,
कोटि-कोटि हाथों वाली नव,
असुरमर्दिनी हम प्रगटायें।।3।।

उत्साह से मुश्किल काम भी सरल हो जाते हैं।

6. क्रांति की मशाल से

क्रांति की मशाल से मशाल को,
देश के जवान तू जलाए जा,
आंधियों के बीच मुस्कुराये जा।।

लोग जो बड़े निराश हो रहे,
मौत की घटाओं में जो सो रहे,
इस घटा के साथ-साथ जिंदगी ये जिंदगी,
तू भी बिगुल देश के बजाये जा,
आंधियों के बीच...........।।1।।

कर प्रणाम तू नये जहान को,
कर प्रणाम तू नये विधान को,
आराधना के गीत हैं, ये गीत हैं, ये गीत हैं,
तू भी साधना के गीत गाये जा,
आंधियों के बीच...........।।2।।

विपत्ति मनुष्य को सबल बनाती है।

7. नदिया न पीये

नदिया न पीये कभी अपना जल,
वृक्ष न खाये कभी अपना फल,
अपने तन को, मन को, धन को,
देश को दे दे दान रे, वो सच्चा इंसान रे,
वो सच्चा इंसान।।

चाहे मिले सोना चांदी, चाहे मिले रोटी बासी,
महल मिले बहुसुखकारी, चाहे मिले कुटिया खाली,
प्रेम और संतोष भाव से, करता जो स्वीकार रे,
वो सच्चा इंसान रे........।।1।।

चाहे करे निंदा कोई, चाहे कोई गुणगान करे,
फूलों से सत्कार करे, कांटों की चिंता न धरे,
मान और अपमान ही दोनों, जिसके लिए समान रे,
वो सच्चा इंसान रे........।।2।।

बुद्धि, कला, चरित्र अनमोल धन है।

८. कोटि-कोटि कण्ठों ने गाया

कोटि-कोटि कण्ठों ने गाया माँ का गौरव गान है,
एक रहे हैं एक रहेंगे, भारत की संतान हैं।।

पंथ विविध चिंतन नानाविधि, बहुविधि कला प्रदेश की,
अलग वेश भाषा विशेष है, सुंदरता इस देश की,
इनको बांट-बांट कर देखे, दुश्मन वो नादान है।। 1।।

समझायेंगे नादानों को, सोया देश जगायेंगे,
दुश्मन के नापाक इरादे, जड़ से काट मिटायेंगे,
भारत भाग्य विधाता हम हैं, जन-जन की आवाज हैं।। 2।।

ऊंच-नीच निज के विभेद ने, दुर्बल किया स्वदेश को,
बाहर से भीतर से घेरा, अंधियारे ने देश को,
मिटे भेद मिट जाये अंधेरा, जलती हुई मशाल हैं।। 3।।

बदलेंगे ऐसी दिशा को, जो परवश मानस करती,
स्वावलंबिता स्वाभिमान से, जाग उठे अंबर धरती,
पुनरपि वैभव के शिखरों पर, बढ़ता देश महान है।। 4।।

स्वयं अनुशासित होना ही उत्तम अनुशासन है।

9. सूरज बदले, चंदा बदले

सूरज बदले, चंदा बदले, बदले चाहे ध्रुवतारा,
पर भारत की आन न बदले, यह संकल्प हमारा।।

उन्नत शीर्ष हिमालय जिसका, वह झुकना क्या जाने,
जो शकारि रिपु–दमन विजेता, वह डरना क्या जाने,
अब संभले वह शत्रु नराधम, जिसने है ललकारा।। 1।।

देवासुर–संग्राम जयी जो, महाबली जगत्राता,
रावण कंस असुर संहारक, सत्य धर्म निर्माता,
इस स्वदेश के हम सपूत हैं, साक्षी है जग सारा।। 2।।

मिली चुनौती जब भी हमको, उसे सदा स्वीकार किया,
शीष चढ़ाकर मातृभूमि का, नित्य नया श्रृंगार किया,
यही शक्ति अब भी अक्षय है, बदलेंगे युग–धारा।।3।।

सही काम करने के लिए कोई समय गलत नहीं होता।

10. अब जाग उठो कमर कसो

अब जाग उठो कमर कसो, मंजिल की राह बुलाती है,
ललकार रही हमको दुनियां, भेरी आवाज लगाती है।।

है ध्येय हमारा दूर सही, पर साहस भी तो क्या कम है,
हमराह अनेकों साथी हैं, कदमों में अंगद का दम है,
सोने की लंका राख करे वह आग लगानी आती है।। 1।।

पग-पग पर कांटे बिछे हुए, व्यवहार कुशलता हममें हैं,
विश्वास विजय का अटल लिये, निष्ठा कर्मठता हममें है,
विजयी पुरुषों की परम्परा अनमोल हमारी थाती है।। 2।।

हम शेर शिवा के अनुगामी, राणा प्रताप की आन लिये,
केशव-माधव का तेज लिये, अर्जुन का शर-संधान लिये,
संगठन तंत्र की परंपरा वैभव का साज सजाती है।। 3।।

कर्म ही पूजा है।

11. लक्ष्य तक पहुँचे बिना

लक्ष्य तक पहुँचे बिना, पथ में पथिक विश्राम कैसा

लक्ष्य है अति दूर दुर्गम मार्ग भी हम जानते हैं,
किन्तु पथ के कंटकों को हम सुमन ही मानते हैं,
जब प्रगति का नाम जीवन, यह अकाल विराम कैसा।। 1।।

धनुष से जो छूटता है बाण कब मग में ठहरता,
देखते ही देखते वह लक्ष्य का ही वेध करता,
लक्ष्य प्रेरित बाण हैं हम, ठहरने का काम कैसा।। 2।।

बस वही है पथिक जो पथ पर निरंतर अग्रसर हो,
हो सदा गतिशील जिसका लक्ष्य प्रतिक्षण निकटतर हो,
हार बैठे जो डगर में पथिक उसका नाम कैसा।। 3।।

आज जो अति निकट है देख लो वह लक्ष्य अपना,
पग बढ़ाते ही चलो बस शीघ्र हो सत्य सपना,
धर्म-पथ के पथिक को फिर देव-दक्षिण वाम कैसा।। 4।।

अपने दोष ढूंढ निकालना वीरों का काम है।

12. फिर आज भुजायें फड़क उठी

फिर आज भुजायें फड़क उठी भारत के वीर जवानों की,
हम पर प्रहार करने वाले चिंता कर अपने प्राणों की।।

जिसने भी हमें चुनौती दी, उस पर आया है क्रोध सदा,
संगीनों का संगीनों से, हम लेते हैं, प्रतिशोध सदा,
हम तत्पर हैं दोहराने को, फिर कथा विजय-अभियानों की।। 1।।

हम फौलादी सीने वाले, हम अंगारे पीने वाले,
शोणित का तिलक लगाते हैं, आजादी से जीने वाले,
साहस से दिशा मोड़ देते, आने वाले तूफानों की।। 2।।

मुश्किल से शांत हुआ करता, जब भी वह रक्त उबलता है,
हम जीवित नहीं छोड़ते हैं, उसको जो जहर उगलता है,
इतिहास कथाएँ कहता है, अब तक अचूक संधानों की।। 3।।

जो अपने आपको दुर्बल समझता है, वह दुर्बल हो जाता है।

13. जिसने मरना सीख लिया है

जिसने मरना सीख लिया है, जीने का अधिकार उसी को,
जो कांटो के पथ पर आया, फूलों का उपहार उसी को।

जिसने गीत सजाये अपने, तलवारों के झन–झन स्वर पर,
जिसने विप्लव राग अलापे, रिम–झिम गोली के वर्षण पर,
जो बलिदानों का प्रेमी है, जगती का है प्यार उसी को।। 1।।

हँस–हँस कर इक मस्ती लेकर, जिसने सीखा है बली होना,
अपनी पीड़ा पर मुस्काना, औरों के कष्टों पर रोना,
जिसने सहना सीख लिया है, संकट है त्यौहार उसी को।। 2।।

दुर्गमता लख बीहड़ पथ की, जो न कभी भी रुका कहीं पर,
अनगिनती आघात सहे पर, जो न कभी भी झुका कहीं पर,
झुका रहा है मस्तक अपना, यह सारा संसार उसी को।। 3।।

मुश्किलों से घबराओ नहीं, संघर्ष करो।

14. मन समर्पित, तन समर्पित

मन समर्पित, तन समर्पित, और यह जीवन समर्पित,
चाहता हूँ मातृ-भू, तूझको अभी कुछ और भी दूँ।

माँ तुम्हारा ऋण बहुत है मैं अकिंचन,
किंतु इतना कर रहा फिर भी निवेदन,
थाल में लाऊँ सजाकर भाल को जब,
स्वीकार कर लेना दया कर यह समर्पण,
गान अर्पित, प्राण अर्पित रक्त का कण-कण समर्पित।। 1।।

माँज दो तलवार को लाओ न देरी,
बाँध दो कसकर कमर पर ढाल मेरी,
भाल पर मल दो चरण की धूल थोड़ी,
शीश पर आशीष की छाया घनेरी,
स्वप्न अर्पित, प्रश्न अर्पित, आयु का क्षण-क्षण समर्पित।। 2।।

तोड़ता हूँ मोह का बंधन क्षमा दो,
गांव मेरे द्वार घर आंगन क्षमा दो,
आज सीधे हाथ में तलवार दे दो,
और बायें हाथ में ध्वज को थमा दो,
ये सुमन लो, ये चमन लो, नीड़ का तृण-तृण समर्पित।। 3।।

प्रबल इच्छाशक्ति दुर्गम रास्तों को पार करने में सहायक है।

15. हम बंगाली हम पंजाबी

हम बंगाली हम पंजाबी, गुजराती, मद्रासी हैं,
लेकिन हम इन सबसे पहले केवल भारतवासी हैं
हम सब भारतवासी हैं।। 1।।

हमें सत्य के पथ पर चलना पुरखों ने सिखलाया है,
जो हमने उनसे सीखा है उस पर चलते जाना है,
हम सब सीधी सच्ची बातें करने के अभ्यासी है,
हम सब भारतवासी हैं।। 2।।

हम अपने हाथों में लेकर अपना भाग्य बनाते हैं,
मेहनत करके बंजर धरती पर सोना उपजाते हैं,
पत्थर को भगवान बना दें हम ऐसे विश्वासी हैं,
हम सब भारतवासी हैं।। 3।।

वो भाषा हम नहीं बोलते, बैर भाव सिखलाती जो,
मीठी बोली बोल के कोयल सबके मन को भाती वो,
जिसके अक्षर भरे प्रेम से हम वह भाषा-भाषी हैं,
हम सब भारतवासी हैं।। 4।।

लगातार अभ्यास से अज्ञानी भी विद्वान बन जाते हैं।

16. स्वतंत्रता को सार्थक करने

स्वतंत्रता को सार्थक करने शक्ति का आधार चाहिये।

स्वर्गगंगा तो अरे भागीरथ यत्नों से भूतल पर आती,
किन्तु शीश पर धारण करने शिवशंकर की शक्ति चाहिये।। 1।।
स्वतंत्रता को ....

अमृत को भी लज्जित करती, समर्थ होकर प्राकृत वाणी,
उन्मेषित करने सौरभ को, तुलसी की रे भक्ति चाहिये।। 2।।
स्वतंत्रता को ....

शीष कटाकर देह लड़ी थी, कोंडाणा पर गाज गिरी थी,
कण-कण में चेतनता भरने, छत्रपति की स्फूर्ति चाहिये।। 3।।
स्वतंत्रता को ....

हिमगिरी शिखरों के कंदर में, घुसे पड़े जो नाग भूमि में,
उन सर्पो का मर्दन करने, कालियांत की नीति चाहिये।। 4।।
स्वतंत्रता को ....

अच्छी शुरुआत आधी सफलता है।

17. चल पड़े पैर जिस ओर

चल पड़े पैर जिस ओर पथिक, उस पथ से फिर डरना कैसा
यह रुक-रुक कर बढ़ना कैसा

हो कर चलने को उद्यम तुम, ना तोड़ सके बंधन घर के
सपने सुख वैभव के राही, ना छोड़ सके अपने उर के।
जब शोलों पर ही चलना है पग फूँक-फूँक रखना कैसा।। 1।।

पहले ही तुम पहचान चुके, यह पथ तो काँटो वाला है।
पग-पग पर पड़ी शिलाएँ हैं, कंकड़ मय काँटो वाला है।
दुर्गम पथ अँधियारा छाया फिर मखमल का सपना कैसा।। 2।।

होता है प्रेम फकीरी से, इस पथ पर चलने वालों को
पथ पर बिछ जाना पड़ता है, पथ पर बढ़ने वालों को
यह राह भिखारी बनने की सुख वैभव का सपना कैसा।। 3।।

इस पथ पर बढ़ने वालों को, बढ़ना ही है केवल आता
आती जो पग में बाधायें, उनसे बस लड़ना ही आता।
तुम भी जब चलते उस पथ पर, फिर रुकना और झुकना कैसा।। 4।।

सफलता प्राप्ति के लिए ज़बरदस्त इच्छाशक्ति रखो।

18. भारत माँ का मान बढ़ाने

भारत माँ का मान बढ़ाने बढ़ते बाँके मस्ताने,
कदम-कदम पर मिल-जुल गाते वीरों के व्रत के गाने।।

ऋषियों के मंत्रों की वाणी, भरती साहस नस नस में,
चक्रवर्तियों की गाथा सुन, नहीं जवानी है बस में
हर-हर महादेव के स्वर से, विश्व गगन को थर्राने।
कदम कदम पर . . . .

हम पर्वत को हाथ लगाकर, संजीवन कर सकते हैं,
मर्यादा बन असुरों का, बलमर्दन कर सकते हैं,
रामेश्वर की पूजा करने जल पर पत्थर तैराने।
कदम कदम पर . . . .

हिरणाकुश का वक्ष चीर दे, जो नरसिंह की दहाड़ लिये,
कालयवन का काल बने जो, योगेश्वर की नीति लिए
चक्र सुदर्शन की छाया में, गीता अमृत बरसाने।
कदम कदम पर . . . .

जो कुछ तुम्हारे हृदय में है उसे अपने होठों पर भी रखो।

19. गीत खुशी के

गीत खुशी के गुनगुनाते बढ़ते जाएँ हम
मुस्कुराने की कला सबको सिखलाएं हम

रुक जाते थक कर राहों में, वे पीछे रह जाते हैं,
लगातार चलते रहते जो, वही सफल हो पाते हैं,
थके बिना चलते रहने की बात बताएँ हम।।

भगत, शिवा, राणा, लक्ष्मी की, परंपरा ये बलिदानी,
ज्ञानेश्वर का ज्ञान तुका, नानक की अमृत सी वाणी,
देशभक्त ज्ञानी बनने की राह दिखाएँ हम।।

रामानुज जगदीश रमन ने, अनगिनत आविष्कार किये,
अथक परिश्रम से माता के, सब सपने साकार किये,
अलख जगाकर विश्वगुरू फिर से कहलायें हम।।

हज़ारों मील का सफर भी पहले कदम से शुरू होता है।

20. अपनी धरती, अपना अम्बर

अपनी धरती, अपना अम्बर, अपना हिन्दुस्तान,
अपना हिन्दुस्तान।
हिम्मत अपनी, ताकत अपनी, अपना वीर जवान,
अपना वीर जवान।।

हिमगिरि शीश मुकुट रतनारे, सागर जिसके चरण पखारे।
गंगा-यमुना की धाराएं, निर्माणों की नींव संवारे।।
नई-नई आशाएं अपनी, अपना हर उत्थान,
अपना हर उत्थान।

विमल इंदु की विमल-चांदनी, चंदा सूरज करे आरती।
मलयानिल के मस्त झकोरे, चंवर झुलाते तुझे भारती।।
कण-कण गायें गौरव गाथा अपना देश महान,
अपना देश महान।

अरुणांचल लद्दाख वतन के, दोनों अपने आंगन द्वारे।
प्राणों को न्यौछावर करते, भारत माँ के वीर दुलारे।।
निशदिन याद हमें आते हैं, वीरों के बलिदान,
वीरों के बलिदान।।

मनुष्य अपनी वाणी से पहचाना जाता है।

21. अब तक सुमनों पर चलते थे

अब तक सुमनों पर चलते थे,
अब काँटो पर चलना सीखें।

खड़ा हुआ है अटल हिमालय दृढ़ता का नित पाठ पढ़ाता,
बहो निरंतर ध्येय-सिंधु तक, सरिता का जल-कण बतलाता,
अपने दृढ़ निश्चय से पथ की बाधाओं को हरना सीखें।।

अपनी रक्षा आप करे जो, देता उसका साथ विधाता,
अन्यों पर अवलम्बित है जो पग-पग पर वह ठोकर खाता,
जीवन का सिद्धांत अमर है, उस पर हम नित चलना सीखें।।

हममें चपला सी चंचलता, हममें मेघों का गर्जन है,
हममें पूर्ण चन्द्रमा चुम्बी, सिन्धु तरंगों का नर्तन है,
सागर से गंभीर बनें हम, पवन समान मचलना सीखें।।

उठें-उठें अब अंधकारमय, जीवन-पथ आलोकित कर दें,
निविड़ निशा के गहन तिमिर को, मिटा आज जग ज्योतित कर दें,
तिल-तिल कर अस्तित्व मिटा दें दीपशिखा सम जलना सीखें।।

समस्या स्वरूप नहीं, समाधान स्वरूप बनो।

22. भारत वंदे मातरम्

भारत वंदे मातरम् जय, भारत वंदे मातरम्।।
भारत वंदे मातरम् जय, भारत वंदे मातरम्।।

रुक ना पाए तूफानों में, सबके आगे बढ़े कदम
जीवन पुष्प चढ़ाने निकले माता के चरणों में हम।। वंदे मातरम्।।1।।

मस्तक पर हिमराज विराजित, उन्नत माथा माता का।
चरण धो रहा विशाल सागर, देश यही सुंदरता का।
हरियाली साड़ी पहने मां, गीत तुम्हारे गायें हम।। वंदे मातरम्।।2।।

नदियन की पावन धारा है, मंगल माला गंगा की।
कमरबंद है विंध्याद्रि का, सातपुड़ा की श्रेणी की।
सह्याद्रि का वज्रहस्त है, पौरुष को पहचानें हम।। वंदे मातरम्।।3।।

नहीं किसी के सामने हमने, अपना शीश झुकाया है।
जो हमसे टकराने आया, काल उसी का आया है।
तेरा वैभव सदा रहे माँ, विजय ध्वजा फहरायें हम।। वंदे मातरम्।।4।।

दूसरों के दोष देखना ही सबसे बड़ा दोष है।

23. अनेकता में एकता-हिन्द की विशेषता

अनेकता में एकता-हिन्द की विशेषता,
एक राह के हैं मीत, गीत एक राग के,
एक बाग के हैं फूल, फूल एक हार के,
देखती है यह जमीन, आसमान देखता,
आसमान देखता, आसमान देखता।। 1।।

एक देश के हैं हम, रंग भिन्न-भिन्न हैं,
एक जननी भारती के, कोटि सुत अभिन्न हैं,
कोटि जीव बालकों में, ब्रह्म एक खेलता,
ब्रह्म एक खेलता, ब्रह्म एक खेलता।। 2।।

कर्म है बँटे हुए पर एक मूल मर्म है,
राष्ट्र भक्ति ही हमारा एक मात्र धर्म है।
कण्ठ-कण्ठ देश का एक स्वर बिखेरता,
एक स्वर बिखेरता, एक स्वर बिखेरता।। 3।।

एक लक्ष्य और एक प्रण से हम जुटे हुए
एक भारती की अर्चना में लगे हुए।
कोटि-कोटि साधकों का एक राष्ट्र देवता,
एक राष्ट्र देवता, एक राष्ट्र देवता।। 4।।

अपने काम के प्रति ईमानदारी ही सच्चा धर्म है।

24. भारत माँ की संतानें

भारत माँ की संतानें हम शीष झुकाना क्या जाने
धरा उठा लें गगन झुका दें उठे चले सीना ताने,
भारत माँ की संतानें हम .....

हम ही कृष्ण का चक्र सुदर्शन हम अर्जुन के तीर हैं
ध्रुव प्रहलाद भरत के भाई हम अभिमन्यु वीर हैं
हम हँसते हैं तूफानों में रोना धोना क्या जानें
भारत माँ की संतानें हम शीष झुकाना क्या जाने।। 1।।

हम प्रताप की पुण्य धरोहर, हम ही शिवा की शान हैं
हम ही राम के अग्नि बाण हैं, चन्द्रगुप्त का मान हैं
गुरूगोविन्द के वंशज है हम, धर्म बदलना क्या जानें
भारत माँ की संतानें हम शीष झुकाना क्या जाने।। 2।।

यह धरती अपनी माता है, हम इसकी संतान हैं,
इसकी सेवा में ही अर्पित करते तन-मन प्राण हैं
इसकी निश दिन करें आरती, और तराने क्या जानें
भारत माँ की संतानें हम शीष झुकाना क्या जाने।। 3।।

जो जैसा सोचता और करता है वह वैसा ही बन जाता है।

25. संग्राम जिन्दगी है

संग्राम जिन्दगी है लड़ना उसे पड़ेगा।
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा।।

इतिहास कुछ नहीं है, संघर्ष की कहानी,
राणा, शिवा, भगतसिंह और झाँसी वाली रानी।
कोई भी कायरों का इतिहास क्यों पढ़ेगा,
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा।। 1।।

आओ लड़े स्वयं के कलुषों से, कलमषों से,
भोगों से, वासना से, रोगों के राक्षसों से।
कुन्दन वही बनेगा जो आग में तपेगा,
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा।। 2।।

घेरा समाज को है, कुण्ठा कुरीतियों ने,
व्यसनों ने, रूढ़ियों ने, निर्मम अनीतियों ने।
इन सब चुनौतियों से है कौन जो लड़ेगा,
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा।। 3।।

चिन्तन चरित्र में अब, विकृति बढ़ी हुई है,
चहुँ ओर कौरवों की, सेना खड़ी हुई है।
क्या पार्थ इन क्षणों भी, व्यामोह में फँसेगा,
जो लड़ नहीं सकेगा, आगे नहीं बढ़ेगा।। 4।।

जो कुछ तुम्हारे हृदय में है उसे अपने होठों पर भी रखो।

26. रक्त शिराओं में राणा का

रक्त शिराओं में राणा का रह-रह आज हिलोरे लेता।
मातृभूमि का कण-कण, तृण-तृण, हमको आज निमंत्रण देता।।

वीर प्रसूता भारत माँ की हम सब बन्धु हैं संतानें,
हर विपदा जो माँ पर आती सहते हैं हम सीना ताने।
युग-युग की निद्रा को तजकर फिर है अपना गौरव चेता,
मातृभूमि का कण-कण......।। 1।।

यह वह भूमि जहाँ पर नित-नित जुड़ता बलिदानों का मेला,
इस धरती के पुत्रों ने ही, हँस-हँस महामृत्यु को झेला।
हमको डिगा न पाया कोई अगणित आये विश्व-विजेता,
मातृभूमि का कण-कण......।। 2।।

आज पुनः आक्रन्त हुई है मातृभूमि हम सबकी प्यारी,
उठो चुनौती को स्वीकारो युवकों आज हमारी बारी।
सीमा पर से अरिदल देखो हमको पुनः चुनौती देता,
मातृभूमि का कण-कण......।। 3।।

कहीं न फिर हमसे छिन जाये देवभूमि कश्मीर हमारी,
समय आ गया खींचो वीरों कोषों से तुम खड्ग दुधारी।
मिटा विश्व से इन दुष्टों को बनें जगत के अतुल विजेता,
मातृभूमि का कण-कण......।। 4।।

मन, काम एवं लोभ को वश में रखो।

27. जननी जन्मभूमि स्वर्ग से महान है

जननी जन्मभूमि, स्वर्ग से महान है।
इसके वास्ते ये तन है, मन है और प्राण हैं।।

इसके कण-कण में लिखा राम-कृष्ण नाम है।
हुतात्माओं के रूधिर से भूमि शस्य-श्याम है।
धर्म का ये धाम है, सदा इसे प्रणाम है।
स्वतंत्र है धरा यहां, स्वतंत्र आसमान है।
जननी जन्मभूमि, स्वर्ग से महान है।। 1।।

इसकी आन पर कभी जो बात कोई आ पड़े।
इसके सामने जो जुल्म के पहाड़ हों खड़े।।
शत्रु सब जहान हों, विरूद्ध विधि-विधान हो,
मुकाबला करेंगे जब तक जान में ये जान है।
जननी जन्मभूमि, स्वर्ग से महान है।। 2।।

इसकी गोद में हजारों गंगा-यमुना झूमती।
इसके पर्वतों की चोटियां गगन को चूमती।।
भूमि ये महान है, निराली इसकी शान है।
इसकी जय-पताका ही स्वयं विजय-निशान है।
जननी जन्मभूमि, स्वर्ग से महान है।। 3।।

सदा मुस्कराते रहो, यह भी संतुष्टि की निशानी है।

28. युगों युगों से यही

युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।

इस धरती ने जन्म दिया है यही पुनीता माता है।
एक प्राण दो देह सरीखा उससे अपना नाता है।
यह धरती है पार्वती मां यही राष्ट्र शिव शंकर है।
दिग्मंडल सांपों का कुंडल कण-कण रूद्र भयंकर है।।
यह पावन माटी ललाट की ललित ललाम ललाटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।
युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।। 1।।

इसी भूमि-पुत्री के कारण भस्म हुई लंका सारी
सुंई नोंक भर भू के पीछे हुआ महाभारत भारी।।
पानी सा बह उठा लहू फिर पानीपत के आंगन में।
बिछा दिए रिपुओं के शव थे उसी तराइन के रण में।।
पृष्ठ बाँचती इतिहासों के अब भी हल्दीघाटी है।
युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।।

सिक्ख मराठे राजपूत क्या बंगाली क्या मद्रासी।
इसी मंत्र का जाप कर रहे युग-युग से भारतवासी।।
बुंदेले अब भी दुहराते यही मंत्र है झांसी में।
देंगे प्राण न देंगे माटी गूंज रहा है नस नस में।।
शीश चढ़ाया काट गर्दनें या अरि-गर्दन काटी है।
खून दिया है मगर नहीं दी कभी देश की माटी है।
युगों-युगों से यही हमारी बनी हुई परिपाटी है।। 3।।

बोलो हमेशा तौल के, हँसों दिल खोल के।

29. यह उथल-पुथल

यह उथल पुथल उत्ताल लहर पथ से न डिगाने पाएगी।
पतवार चलाते जाएंगे, मंजिल आएगी आएगी।

लहरों की गिनती क्या करना, कायर करते हैं करने दो,
तूफानों से सहमें हैं जो, पल-पल मरते हैं मरने दो।
चिर नूतन पावन बीज लिए, मनु की नौका तिर जाएगी।। 1।।
मंजिल आएगी आएगी ....।

इस धरती में शक हूण मिटे, गजनी गौरी और अब्दाली।
पश्चिम की लहरें लौट गयी, ले ले अपनी झोली खाली।
पूंजी शाही बर्बरता सब, ये धरती उदर समाएगी।। 2।।
मंजिल आएगी आएगी ....।

अनगिनत संकट जो झेल बढ़ा, वह यान हमारा अनुपम है।
नायक पर है विश्वास अटल, उर में बाहों में दम खम है।
यह रैन अंधेरी बीतेगी, उषा जय मुकुट चढ़ाएगी।। 3।।
मंजिल आएगी आएगी ....।

महान पुरुष समस्याओं को देख रुकते नहीं, आगे बढ़ते हैं।

30. निर्माणों के पावन युग में

निर्माणों के पावन युग में हम चरित्र निर्माण न भूलें।
स्वार्थ समाधान की आँधी में वसुधा का कल्याण न भूलें।।

माना अगम अगाध सिंधु है, संघर्षों का पार नहीं है,
किन्तु डूबना मझधारों में, साहस को स्वीकार नहीं है,
जटिल समस्या सुलझाने को नूतन अनुसंधान न भूले।। 1।।

शीतल विनय आदर्श श्रेष्ठता तार बिना झंकार नहीं है,
शिक्षा क्या स्वर साध सकेगी? यदि नैतिक आधार नहीं है,
कीर्ति कौमुदी की गरिमा में संस्कृति का सम्मान न भूले।। 2।।

आविष्कारों की कृतियों में, यदि मानव का प्यार नहीं है,
सृजनहीन विज्ञान व्यर्थ है, प्राणी का उपकार नहीं है,
भौतिकता के उत्थानों में, जीवन का उत्थान न भूलें।। 3।।

होठों पर खिलती मुस्कराहट मुश्किल काम को भी आसान कर देती है।

31. हमको है अभिमान देश का

हमको है अभिमान देश का।

जिसके पाँव पखारे सागर,
गंगा भरे संवारे गागर,
शोभित जिस पर स्वर्ग वही तो,
शीश मुकुट हिमवान देश का,
हमको है अभिमान देश का।। 1।।

जिसके रजकण का कर चन्दन,
झुक-झुक नभ करता पद-वन्दन,
कली-कली का प्राण खोलता,
स्वर्ण-रश्मि का गान देश का
हमको है अभिमान देश का।। 2।।

कोटि बाहु में शक्ति इसी की,
कोटि प्राण में भक्ति इसी की,
कोटि-कोटि कण्ठों में गुन्जित,
मधुर-मधुर जय गान देश का,
हमको है अभिमान देश का।। 3।।

इस पर तन-मन प्राण निछावर
भाग्य और भगवान निछावर,
सींच खून से हम दिखायेंगे,
मुख-पंकज अम्लान देश का।
हमको है अभिमान देश का।। 4।।

सुन्दर वही है जिसकी कृतियां एवं कार्य सुन्दर है।

32. राष्ट्र की जय चेतना

राष्ट्र की जय चेतना का गान वंदे मातरम्,
राष्ट्रभक्ति प्रेरणा का गान वंदे मातरम्।।
वंदे मातरम् ....

वंशी के बहते स्वरों का प्राण वंदे मातरम्,
झल्लरी झनकार झनके नाद वंदे मातरम्,
शंख के संघोष का संदेश वंदे मातरम्।। 1।।

सृष्टि बीज मंत्र का है मर्म वन्दे मातरम्,
राम के वनवास का काव्य है वंदे मातरम्,
दिव्य गीता ज्ञान का संगीत वंदे मातरम्।। 2।।

हल्दीघाटी के कणों में व्याप्त वंदे मातरम्,
दिव्य जौहर ज्वाल का है तेज वंदे मातरम्,
वीरों के बलिदान की हुंकार वंदे मातरम्।। 3।।

जन-जन के हर कंठ का हो गान वंदे मातरम्,
अरिदल थर-थर काँपे सुनकर नाद वंदे मातरम्,
वीर पुत्रों की अमर ललकार वंदे मातरम्।। 4।।

भगवान से कम भार के लिए नहीं बल्कि मजबूत कंधों के लिए प्रार्थना करो।

33. कभी न रोक सके

कभी न रोक सके हैं हमको आँधी और तूफान,
देशभक्ति के मतवाले हम बालक वीर जवान।।

हम सब भारत माँ के बच्चे आशा हिम्मत वाले,
हम हैं नन्हें वीर सिपाही कभी न झुकने वाले,
जितने जग में शत्रु मित्र हैं, उनकी है पहचान।।

जिस धरती की गोदी में हम पलकर बड़े हुए हैं,
घुटनों के बल सरक-सरक कर जिस पर खड़े हुए हैं,
उसी धरा की धूल में खेले है भगवान।।

जब-जब कोई शत्रु हमारा भिड़ने आया,
पाक चीन जैसे दुष्टों को हमने खूब छकाया,
टकराकर हो गए चूर सब भागे लेकर जान।।

उठ जाग भारत जाग रे, आलस्य निद्रा त्याग रे।

34. संगठन गढ़े चलो

संगठन गढ़े चलो, सुपंथ पर बढ़े चलो,
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किए चलो।।

युग के साथ मिल के सब, कदम बढ़ाना सीख लो,
एकता के स्वर में गीत गुनगुनाना सीख लो,
भूल कर भी सुख में जाति, पंथ की न बात हो,
भाषा प्रांत के लिए, कभी न रक्तपात हो,
फूट का भरा घड़ा है, फोड़ कर बढ़े चलो।।
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किए चलो।।

आ रही है आज चारों ओर से यही पुकार,
हम करेंगे त्याग मातृभूमि के लए अपार,
कष्ट जो मिलेंगे मुस्कुरा के सब सहेंगे हम,
देश के लिए सदा जिएंगे और मरेंगे हम,
देश का ही भाग्य अपना भाग्य है ये सोच लो।।
भला हो जिसमें देश का, वो काम सब किये चलो।।

सही शुरूआत-आधी सफलता है।

35. न यह समझो कि हिन्दुस्तान की

न यह समझो कि हिन्दुस्तान की तलवार सोई है।

जिसे सुनकर दहलती थी कभी छाती सिकन्दर की
जिसे सुन करके ‘कर’ से छूटती थी तेग़ बाबर की
जिसे सुन शत्रु की फौजें बिखरती थीं सिहरती थीं
विसर्जन की शरण ले डूबती नावें उभरती थीं
हुई नीली जिसकी चोट से आकाश की छाती
न यह समझो कि अब रण बांकुरी हुंकार सोई है।। 1।।

फिरंगी से ज़रा पूछो कि हिन्दुस्तान कैसा है
कि हिन्दुस्तानियों के रोष का तूफान कैसा है
जरा पूछो भयंकर फांसियों के लाल तख्तों से
बसा है नाग बांबी में मगर ओ छेड़ने वालों
न यह समझो कि जीवित नाग की फुंकार सोई है।। 2।।

न सीमा का हमारे देश ने विस्तार चाहा है
किसी के स्वर्ण पर हमने नहीं अधिकार चाहा है
मगर यह बात कहने में चूके हैं न चूकेंगे
लहू देंगे मगर इस देश की मिटटी नहीं देंगे
किसी लोलुप नजर ने यदि हमारी मुक्ति को देखा
उठेगी तब-प्रलय की आग जिस पर क्षार सोई है।। 3।।

हताश न होना ही सफलता का मूल है।

36. यह अमर शहीदों की धरती

यह अमर शहीदों की धरती, बलिदान हुए लाखों जीवन।
उनके बलिदानों को हम सब, शीश झुका कर करें नमन।।

गाँधी, पटेल, नेहरु, सुभाष, लाल, बाल और पाल विपिन।
कोटि चरण चल पड़े साथ, ले सत्य अहिंसा का सम्बल।।
उनके पथ पर हम बढ़े चलें, भारत होगा नंदन उपवन
शीश झुका कर करें नमन।। 1।।

अपने इस देश की रक्षा हित, अशफाक, भगत, आज़ाद बनें।
इस देश पे मरने मिटने का, बिस्मिल सा मन में भाव भरें।।
रोशन सिंह जैसे वीर बनें, चमकायें, भारत भाग्य भुवन।
शीश झुका कर करें नमन।। 2।।

पुरखों का मन में ध्यान धरें, राणा सांगा की शान अमर।
कुंवर सिंह अभिलाषी की, तात्या, नाना की शान अमर।।
उनकी आशा अभिलाषा को, हम करें पूर्ण देकर जीवन।
शीश झुका कर करें नमन।। 3।।

जो हुए देश पर थे शहीद, उनका सुस्मित सम्मान करें।
हम भी बलि पथ पर बढ़े चलें इस अमर देश का मान करें।।
भारत के वीर–शहीदों का, हम करें, सदा शत–शत वन्दन।
शीश झुका कर करें नमन।। 4।।

निराशा पराजय का दूसरा नाम है।

37. चलो जवानो, बढ़ो जवानो

चलो जवानो, बढ़ो जवानों, माँ ने हमें पुकारा है,
दुश्मन ने ललकारा है।।

राणा सांगा, शिव, प्रताप का विक्रम भूल नहीं जाना,
भगतसिंह के अतुल त्याग को कभी न मन से बिसराना,
झांसी की रानी का गौरव सकल देश में फैलाना,
गुरु-पुत्रों के बलिदानों की अमर कथाएं दुहराना।
बढ़ो-बढ़ो ओ सिंह सपूतों, हिमगिरि ने ललकारा है ।। 1 ।।

तेरे होते सीमाओं पर दुश्मन न आने पाये,
आ जाये तो वापस अपना शीश न ले जाने पाये,
जिधर बढ़ा तूफाँ शरमाये, सागर-पर्वत झुक जाये,
शीश जहां अर्पण हो जाये, वहां तीर्थ ही बन जाये,
भारत माँ की लाज बचाना, पहला काम हमारा है ।। 2 ।।

गंगा, यमुना, कावेरी की लहरें हमें बुलाती हैं,
राम-कृष्ण की धरती ऊपर गीता-ज्ञान सुनाती है,
उठो-उठो ज्यों पार्थ उठे, तुम वैरी को ललकार उठो,
बढ़ो-बढ़ो, ओ पार्थ बढ़ो तुम, वैरी ना बचने पाये,
भारत माँ की सेवा करना यह कर्त्तव्य हमारा है ।। 3 ।।

विपत्ति मनुष्य को सबल बनाती है।

38. सोने जैसी माटी इसकी

सोने जैसी माटी इस की अमृत जैसा पानी है
घर–घर में गाई जाती भारत की अमर कहानी है।

एक ओर है खड़ा हिमालय एक ओर सागर विशाल है
चरण पखारे गंगा सागर कश्मीर दैदिप्य भाल है।
है देवों की जन्म भूमि यह तपो भूमि कल्याणी है
सोने जैसी माटी इस की अमृत जैसा पानी है।। 1।।

गंगा यमुना अति पावन धरती को स्वर्ग बनाती हैं
कण–कण में ये प्राण सींच कर जीवन को दुलराती हैं।
स्वर्ग से सुन्दर धरा हमारी सारे जग ने मानी है
सोने जैसी माटी इसकी अमृत जैसा पानी है।। 2।।

भगत सिंह आज़ाद सरीखे भारत माँ के लाल यहाँ
इनके आगे अंग्रेंजों की गली कभी न दाल यहाँ
बलिदानी आदर्श है इनके इनकी धन्य जवानी है
सोने जैसी माटी इसकी अमृत जैसा पानी है।। 3।।

सूरज सब से पहले आकर देता नया सवेरा है,
उड़े गगन में पंछी उनका यह उन्मुक्त बसेरा है
सब के सुख की करे कामना अपनी रीत पुरानी है
सोने जैसी माटी इसकी अमृत जैसा पानी है।। 4।।

समय सबसे बहुमूल्य धन है।

39. देश जागे देश जागे

देश जागे देश जागे, मंत्र सब गुंजा रहे हैं।
मातृमंदिर के पुजारी, एक स्वर में गा रहे हैं।।

जिसकी चिंगारी हृदय में प्रेरणा साहस जगा दे
और तन मन का सहजतम मोह भ्रम भय सब जला दे
उस अनोखी आग को सौ यज्ञ कर सुलगा रहे हैं
मातृमंदिर के पुजारी, एक स्वर में गा रहे हैं।।1।।

पथ कठिन हो या सरल हो चलने का समान मांगे
तेज तम बलिदान पुलकित देश का सम्मान जागे
चिर विजय की कामना हर स्वस्थ्य मन अपना रहे हैं
मातृमंदिर के पुजारी, एक स्वर में गा रहे हैं।।2।।

शक्ति संचय से विकल जब दीनता का सहज लय हो
मातृसेवा में निहित जब देश का प्रत्येक जन हो
वे सुहाने सुखद पल प्रतिपल निकटतम आ रहे हैं
मातृमंदिर के पुजारी, एक स्वर में गा रहे हैं।।3।।

कर्मशील व्यक्ति भाग्य को नहीं कोसते।

40. सागर वसना पावन देवी

सागर वसना पावन देवी सरस सुहावन भारत माँ।
हिमगिरि पीन पयोधर वत्सल जन मन भावन भारत माँ

तेरी रज को सिंचित करने गौ-रस सरिता बहती थीं
गंगा यमुना सिंधु सदा मिल ललित कथायें कहती थीं
आज बहाती खंडित होकर करूणा सावन भारत माँ।। 1।।

तेरी करूणा का कण पाने याचक बन जग आता था।
तेरे दर्शन से हो हर्षित मन वांछित फल पाता था
आज भिखारी हैं सुत तेरे उजड़ा कानन भारत माँ।। 2।।

जाग उठो माँ दुर्गा बनकर कोटि भुजाओं में बल भरकर
तेरे भक्त पुजारी जन का सागर सा लहराये अंतर
नत मस्तक हो फिर जग माँगे तेरा आशीष भारत माँ।। 3।।

गलती करना पाप नहीं, उसे छिपाना पाप है।

41. चलें चलें हम निशिदिन अविरत

चलें चलें हम निशिदिन अविरत, चले चले हम सतत् चलें
कर्म करें हम निरलस पल-पल, दिनकर सम हम सदा जलें।।

सोते नर का भाग्य सुप्त है, जागे नर का भाग्य जागता
उठने पर वह झट से उठता, पग बढ़ते ही वह भी बढ़ता
आप्त वचन यह ऋषि मुनियों का, नर है नर का भाग्य विधाता
पुरखों की यह सीख समझकर, कर्मलीन हों सदा चलें।। 1।।

आर्य धर्म को पुनः प्राणमय, करने निकले घर से शंकर
केरल से केदारनाथ तक, घूमे गुमराहों पर जयकर
विचरे अचल वनांचल मरुथल, ऐक्य तत्व का भाव जगाकर
उस दिग्विजयी की गति लेकर, कर्म करें कर्मण्य बनें।। 2।।

गाड़ी मेरा घर है कहकर, जिसने की दिन रात तपस्या
मै नहीं तू ही तू यह जपकर, जिसने की माँ की परिचर्या
जय ही जय की धुन से जिसने, पूरी की जीवन की यात्रा
उस माधव के अनुचर हम नित, काम करे अविराम चलें।। 3।।

अधिक वृक्ष लगाओ, प्रदूषण भगाओ।

42. आज तन मन और जीवन

आज तन मन और जीवन धन सभी कुछ हो समर्पण
राष्ट्रहित की साधना में, हम करें सर्वस्व अर्पण .....।।

त्यागकर हम शेष जीवन की, सुसंचित कामनायें
ध्येय के अनुरूप जीवन, हम सभी अपना बनायें
पूर्ण विकसित शुद्ध जीवन–पुष्प से हो राष्ट्र अर्चन...।।1।।

यज्ञ हित हो पूर्ण आहुति, व्यक्तिगत संसार स्वाहा
देश के कल्याण में हो, अतुल धन भंडार स्वाहा
कर सकें विचलित न किंचित मोह के ये कठिन बंधन ...।।2।।

हो रहा आह्वान तो फिर, कौन असमंजस हमें है
उच्चतर आदर्श पावन प्राप्त युग युग से हमें है
हम ग्रहण कर लें पुनः वह त्यागमय परिपूर्ण जीवन ...।।3।।

खेलो खेल, बनो निरोग।

43. ध्येय मार्ग पर चले वीर तो

ध्येय मार्ग पर चले वीर तो पीछे अब न निहारो
हिम्मत कभी न हारो, हिम्मत कभी न हारो।

तुम मनुष्य हो शक्ति तुम्हारे जीवन का संबल है
और तुम्हारा अतुलित साहस गिरि की भाँति अचल है
तो साथी केवल पल-भर को माया मोह बिसारो।।

मत देखो कितनी दूरी है कितना लम्बा मग है
और न सोचो साथ तुम्हारे आज कहाँ तक जग है
लक्ष्य-प्राप्ति की बलिवेदी पर अपना तन मन वारो

आज तुम्हारे साहस पर ही मुक्ति सुधा निर्भर है
आज तुम्हारे स्वर के साथी कोटि कंठ के स्वर हैं
तो साथी बढ़ चलो मार्ग पर आगे सदा निहारो।।

संयम से हमारी शक्तियाँ हजार गुणा बढ़ जाती है।

44. एक नया इतिहास रचें हम

एक नया इतिहास रचें हम एक नया इतिहास।

डगर-डगर सब दुनिया चलती हम बीहड़ में पन्थ बनायें।
मंजिल चरण चूमने आये हम मंजिल के पास न जायें।
धारा के प्रतिकूल नाव खे एक नया विश्वास रचें हम।
एक नया इतिहास रचें हम एक नया इतिहास।।

दूर हटाकर जग के बंधन बदलें हम जीवन की भाषा।
छिन्न-भिन्न करके बंधन बदलें हम जीवन परिभाषा।
अंगारों में फूल खिलाकर एक नया मधुमास रचें हम।
एक नया इतिहास रचें हम एक नया इतिहास।।

अम्बर हिले धरा डोले पर हम अपना पन्थ न छोड़ें।
सागर सीमा भूले पर हम अपना ध्येय न छोड़ें।
स्नेह प्यार की वसुन्धरा पर एक नया आकाश रचें हम।
एक नया इतिहास रचें हम एक नया इतिहास।।

क्रोध अनेक बीमारियों की जड़ है, शांति सर्वश्रेष्ठ औषधि है।

45. हम आजादी के रखवाले

हम आजादी के रखवाले बाधाओं की परवाह नहीं।
हम भारत माँ के सुत प्यारे पद यश की हमको चाह नहीं।

हम उस कानन के वासी हैं आजादी जिसमें खिलती है,
समरस जीवन की गंगा धाराएँ पग –पग मिलती हैं।
हम शाश्वत पथ के राही हैं छल कपट हमारी राह नहीं,
हम भारत माँ के सुत प्यारे।।1।।

हम शान्ति प्रणेता शक्ति सुवन सत् पथ पर निशिदिन बढ़ते हैं,
गिरि पर्वत नदी दरारों में हम निर्भय होकर चलते हैं।
लहरों की छाती चीर चले कुछ संकट सिन्धु अथाह नहीं,
हम भारत माँ के सुत प्यारे।।2।।

मुसकाते हरदम रहते हैं मन में सुलगाये चिनगारी,
आदर्शों की भीषण ज्वाला भस्मित करती जड़ता सारी।
पर अमृत हम छलकाते हैं फैलाते अन्तर्दाह नहीं,
हम भारत माँ के सुत प्यारे।।3।।

सभी औषधियों में उत्तम है व्यायाम और संतुलित भोजन।

46. हमें फिर से धरा पर

हमें फिर से धरा पर ज्ञान की गंगा बहानी है
जगत विख्यात भारत के सपूतों की कहानी है।।

विवेकानंद से जग ने नवल आध्यात्म पाया था
कि सोया कर्म दर्शन रामतीरथ ने जगाया था
जला सकती न आग इन्हें डुबा सकता न पानी है।। 1।।

निशा में उर्वशी को माँ कहे इस भूमि का अर्जुन
निरख–रमणी शिवा का मात्र भावों से भरा था मन
यही निष्ठा पुनः सबके चरित्रों मे जगानी है।। 2।।

हुई है धन्य जिनके त्याग से स्वातंत्र्य की बलिवेदी
भगत सिंह और राणाजी की जिनके स्वर गगनभेदी
खुशी से प्राण देना शहीदों की निशानी है।। 3।।

घड़ी की टिक-टिक के समान सदैव चलते रहना चाहिये।

47. राष्ट्र भक्ति ले हृदय में

राष्ट्र भक्ति ले हृदय में हो खड़ा यदि देश सारा
संकटों पर मात कर यह राष्ट्र विजयी हो हमारा।।

क्या कभी किसी ने सुना है सूर्य छिपता तिमिर भय से
क्या कभी सरिता रुकी है बांध से वन पर्वतों से
जो न रुकते मार्ग चलते चीर कर सब संकटों को
वरण करती कीर्ति उनका छोड़ कर सब असुर दल को
ध्येय-मंदिर के पथिक को कण्टकों का ही सहारा।।1।।

हम न रुकने को चलें हैं सूर्य के यदि पुत्र हैं तो
हम न हटने को चलें हैं सरित की यदि प्रेरणा तो
चरण अंगद ने रखा है आ उसे कोई हटाए
दहकता ज्वालामुखी यह आ उसे कोई बुझाए
मृत्यु की पी कर सुधा हम चल पड़ेंगे ले दुधारा।।2।।

ज्ञान के विज्ञान के भी क्षेत्र में हम बढ़ चलेंगे।
नील नभ के रूप के नव अर्थ भी हम कर सकेंगे
भोग के वातावरण में त्याग का संदेश देंगे
त्रास के घने बादलों से सौख्य की वर्षा करेंगे
स्वप्न यह साकार करने संगठित हो देश सारा।।3।।

कहने की वृति छोड़ो, करने का अभ्यास करो।

48. सबसे ऊँची विजय पताका

सबसे ऊँची विजय पताका लिए हिमालय खड़ा रहेगा।
मानवता का मानबिन्दु यह भारत सबसे बड़ा रहेगा।।

विन्ध्या की चट्टानों पर रेवा की यह गति तूफानी
शत् शत् वर्षों तक गायेगी जीवन की संघर्ष कहानी
इसके चरणों में नत होकर हिन्दु महादधि पड़ा रहेगा
सबसे ऊँची विजय पताका लिए हिमालय खड़ा रहेगा।।1।।

जिसकी मिट्टी में पारस है स्वर्ण–धूलि उस बंग भूमि की
पंचनदों के फव्वारों से सिंची बहारें पूण्य–भूमि की।
शीर्ष–बिन्दु श्रीनगर सिन्धु तक सेतुबन्धु भी अड़ा रहेगा
सबसे ऊँची विजय पताका लिए हिमालय खड़ा रहेगा।।2।।

जिस धरती पर चन्दा–सूरज साँझ–सवेरे नमन चढ़ाते
षड्–ऋतु के सरगम पर पंछी दीपक और मल्हार सुनाते।
वही देश–मणि माँ–वसुधा के हृदय–हार में जड़ा रहेगा
सबसे ऊँची विजय पताका लिए हिमालय खड़ा रहेगा।।3।।

आदमी की आधी होशियारी उसकी हिम्मत में है।

49. तरुण वीर देश के

तरुण वीर देश के मूर्त वीर देश के
जाग जाग जाग रे मातृ भू पुकारती ...2

शत्रु अपने शीश पर आज चढ़ के बोलता
शक्ति के घमण्ड में देश मान तौलता
पार्थ की समाधि को शम्भु के निवास को
देख आँख खोल तू अर्गला टटोलता
अस्थि दे कि रक्त तू, वज्र दे कि शक्ति तू
कीर्ति है खड़ी हुई आरती उतारती। मातृ भू पुकारती।। 1।।

आज नेत्र तीसरा रुद्र देव का खुले
ताण्डव के तान पर काँप व्योम भू डुले
मानसर पे जो उठी बाहु शीघ्र ध्वस्त हो
बाहु-बाहु वीर की स्वाभिमान से खिले
जाग शंख फूंक रे, शूर यों न चूक रे
मातृ भूमि आज फिर है तुझे निहारती। मातृ भू पुकारती।। 2।।

आज हाथ रिक्त क्यों जन-जन विक्षिप्त क्यों
शस्त्र हाथ में लिये करके तिरछी आज भौं
देश-लाज के लिए रण के साज के लिए
समय आज आ गया तू खड़ा है मौन क्यों
करो सिंह गर्जना, शत्रु से है निबटना
जय निनाद बोल रे है अजेय भारती। मातृ भू पुकारती।। 3।।

आत्मविश्वास से धैर्य उत्पन्न होता है।

50. जाग उठा है आज देश का

जाग उठा है आज देश का वह सोया अभिमान।
प्राची की चंचल किरणों पर आया स्वर्ण विहान।।

स्वर्ण प्रभात खिला घर-घर में जागे सोये वीर
युद्धस्थल में सज्जित होकर बढ़े आज रणधीर
आज पुनः स्वीकार किया है असुरों का आह्वान।। जाग उठा...

सहकर अत्याचार युगों से स्वाभिमान फिर जागा
दूर हुआ अज्ञान पार्थ का धनुष-बाण फिर जागा
पांचजन्य ने आज सुनाया संस्कृति का जयगान।। जाग उठा...

जाग उठी है वानर-सेना जाग उठा वनवासी
चला उद्‌धि को आज बाँधने ईश्वर का विश्वासी
दानव की लंका में फिर से होता है अभियान।। जाग उठा...

खुला शम्भु का नेत्र आज फिर वह प्रलयंकर जागा
तांडव की वह लपटें जागी वह शिवशंकर जागा
ताल-ताल पर होता जाता पापों का अवसान।। जाग उठा...

ऊपर हिम से ढकी खड़ी हैं वे पर्वत मालाएँ
सुलग रही हैं भीतर-भीतर प्रलयंकर ज्वालाएँ
उन लपटों में दिख रहा है भारत का उत्थान।। जाग उठा...

परिश्रम से ही कार्य सिद्ध होते हैं, इच्छाओं से नहीं।

51. अरुण गगन पर

अरुण गगन पर महा प्रगति का अब फिर मंगल गान उठा।
करवट बदली अंगड़ाई ली सोया हिन्दुस्थान उठा।।

सौरभ से भर गई दिशायें अब धरती मुसकाती है,
कण-कण गाता गीत गगन के सीमा अब दुहराती है।
मंगल-गान सुनाता सागर गीत दिशायें गाती हैं,
मुक्त पवन पर राष्ट्र-पताका लहर-लहर लहराती है।
तरूण रक्त फिर लगा खौलने हृदयों मे तूफान उठा,
करवट बदली अंगड़ाई ली सोया हिन्दुस्थान उठा।।1।।

रामेश्वर का जल अंजलि में काश्मीर की सुन्दरता,
कामरूप की धूल द्वारका की पावन प्यारी ममता।
बंग-देश की भक्ति-भावना महाराष्ट्र की तन्मयता,
शौर्य पंचनद का औ-राजस्थानी विश्व-विजय-क्षमता।
केन्द्रित कर निज प्रखर तेज को फिर भारत बलवान उठा,
करवट बदली अंगड़ाई ली सोया हिन्दुस्थान उठा।।2।।

बिन्दु-बिन्दु जल मिलकर बनती प्रलयंकर सर की धारा,
कण-कण भू-रज मिल कर करती अंधकारमय जग सारा।
कोटि-कोटि हम उठें उठायें भारतीयता का नारा,
बढ़े विश्व के बढ़ते कदमों ने फिर हमको ललकारा।
जगे देश के कण-कण से फिर जन-जन का आह्वान उठा,
करवट बदली अंगड़ाई ली सोया हिन्दुस्थान उठा।।3।।

अपना आश्रय और दीपक स्वयं बनो।

52. भारत हमारी माँ है

भारत हमारी माँ है माता का रूप प्यारा
करना इसी की रक्षा कर्तव्य है हमारा...

जननी समान धरती जिस पर जन्म लिया है
निज अन्न वायु जल से जिसने बड़ा किया है
जीवन वो कैसा जीवन इसपर अगर न वारा।।1।।

स्वर्णिम प्रभात जिस का अमृत लुटाने आए
जहाँ सांझ मुस्कुराकर दिन की थकान मिटाए
दिन-रात का चलन भी जहाँ शेष जग से न्यारा।।2।।

जहाँ घाम भीगा पावस भीनी शरद सुहाये
बीते शिशिर को पतझड़ देकर वसंत जाये
जिसे धूप छांव वर्षा हिमपात ने सँवारा।।3।।

पावन पुनीत माँ का मन्दिर सहज सुहाना
फिर से लुटे न बेटो तुम नींद में न खोना
जागृत सुतों का बल ही माँ का सदा सहारा।।4।।

मनुष्य की पहचान उसके विचारों से होती है।

53. देश उठेगा

देश उठेगा अपने पैरों निज गौरव के भान से।
स्नेह भरा विश्वास जगाकर जीयें सुख सम्मान से।।
देश उठेगा ।।ध्रु.।।

परावलम्बी देश जगत में, कभी न यश पा सकता है।
मृग तृष्णा में मत भटको, छीना सब कुछ जा सकता है।।
मायावी संसार चक्र में कदम बढ़ाओ ध्यान से।
अपने साधन नहीं बढ़ेंगे औरों के गुणगान से.... ।।1।।

इसी देश में आदिकाल से अन्न, रत्न भण्डार रहा।
सारे जग को दृष्टि देता, परम ज्ञान आगार रहा।।
आलोकित अपने वैभव से, अपने ही विज्ञान से।
विविध विधाएँ फैली भू पर अपने हिन्दूस्थान से... ।।2।।

अथक किया था श्रम अनगिन जीवन अर्पित निर्माण में।
मर्यादित उपभोग हमारा, पवित्रता हर प्राण में।।
परिपूरक परिपूरण सृष्टि, चलती ईश विधान से।
अपनी नव रचनाएँ होंगी, अपनी ही पहचान से.... ।।3।।

आज देश की प्रज्ञा भटकी, अपनो से हम टूट रहे।
क्षुद्र भावना स्वार्थ जगा है, श्रेष्ठ तत्व सब छूटे रहे।।
धारा 'स्व' की पुष्ट करेंगे समरस अमृत पान से।
कर संकल्प गरज कर बोले, भारत स्वाभिमन से..... ।।4।।

मनुष्य की पहचान उसके विचारों से होती है।

54. गौरवशाली परम्परा

आदिकाल से अखिल विश्व को, देती जीवन यही धरा।
गौरवशाली परम्परा..... ।।ध्रु.।।

जीवन की आदर्श चिन्तना, परिपूरण परिक्व विचार
कालातीत है दर्शन अपना, आत्मवत् सब सृष्टि निहार
सारा जग परिवार हमारा, पूज्या माता वसुन्धरा
गौरवशाली परम्परा..... ।।1।।

परमेश्वर के रूप अनेककों, अपने अपने मार्ग विशेष
श्रद्धा भक्ति अक्षय निष्ठा, नहीं किसी से राग न द्वेष
विविध पंथ वैशिष्ट्य सुवासित, एक सत्य का भाव भरा
गौरवशाली परम्परा... ।।2।।

शील सत्य संयम मर्यादा, शुद्ध विशुद्ध रहा व्यवहार
करुणा प्रेम सहज सा छलका, सेवा तप ही जीवन सार
अमर तत्व के अमर पुजारी, विष पीकर भी नहीं मरा
गौरवशाली परम्परा...... ।।3।।

सघन ध्यान सकाग्र ज्योति से, किये गहनतम अनुसंधान
कला शिल्प संगीत रसायन, गणित अधाु आयुर्विज्ञान
सभी विधाएँ आलोकित कर, महिमामय भूलोक वरा
गौरवशाली परम्परा.... ।।4।।

मनुष्य की पहचान उसके विचारों से होती है।

55. कदम मिलाकर

कदम मिलाकर बढ़ते हुएँ, घर घर में नव सुमन खिलाएँ
मंगल पावन नवयुग वेला, सुख वैभव धरती पर लाएँ।।
कदम मिलाकर बढ़ते जाएँ ।।ध्रु.।।

पुण्य धरा यह भरतखण्ड की, कोई भेद न कष्ट रहेगा
संस्कार युत् समरस जीवन, यज्ञ सुगन्ध समीर बहेगा
दिव्य शृंखला अनगिन दीपक, एक एक कर दीप जलाएँ
कदम मिलाकर बढ़ते जाएँ ।।1।।

अपना गौरव जाग रहा है, जाग रही है अपनी शक्ति
आत्म-तत्व सब ओर निहारें, निखरे निर्मल निश्चल भक्ति
सेवा धर्म है परम् साधना, विकसित जीवन पुष्प चढ़ाएँ
कदम मिलाकर बढ़ते जाएँ ।।2।।

कठिन परिश्रम स्वत्व धरा पर, सभी दिशा हो रचना उत्तम
विश्व-वंद्य हो भारत माता, विविध विधाएँ सुन्दर अनुपम
नूतन संहिता जग कल्याणी, अपनी माटी से विकसाएँ
कदम मिलाकर बढ़ते जाएँ ।।3।।

काल चुनौती स्वीकारी है, वीरव्रती अब नहीं रुकेगा
पराक्रमी सामर्थ्य हमारा, उन्नत मस्तक नहीं रुकेगा
नीलाम्बर पर अरुण पताका, अपने हाथों से फहराएँ
कदम मिलाकर बढ़ते जाएँ ।।4।।

मनुष्य की पहचान उसके विचारों से होती है।

56. चले निरन्तर साधना

निर्मल पावन भावना
सभी के सुख की कामना -
गौरवमय समरस जन जीवन, यही राष्ट्र आराधना।
चले निरन्तर साधना ।।ध्रु.।।

जहाँ अशिक्षा अन्धकार है, वहीं ज्ञान का दीप जलाएँ
स्नेह भरी अनुपम शैली से, संस्कार की जोत जगाएँ
सभी को लेकर साथ चलेंग, दुर्बल का कर थामना ।।1।।

जहाँ व्याधियों और अभावों - में मानवता तड़प रही
घोर विकारों, अभिशापों में, देखो जगती झुलस रही
एक एक आँसू को पौछें, सारी पीड़ा लाँघना ।।2।।

जहाँ विषमता भेद अभी है, नयी चेतना भरनी है
न्यायपूर्ण मर्यादा घारे, विकास रचना करनी है
स्वाभिमन से सभी खड़े हों, करे न कोई याचना ।।3।।

''नर-सेवा नारायण सेवा'' है अपना कर्तव्य महान्
अपनी भक्ति अपनी शक्ति, करना है जन जन का त्राण
अपनें तप से प्रगटाएंगे, माँ - भारत कमलासना ।।4।।

मनुष्य की पहचान उसके विचारों से होती है।

57. जीवन में आनन्द

सभी सुखी हों सभी निरोगी, जीवन में आनन्द हो।
स्नेहमृत अविरल छलकाएँ, शीतल, मन्द, सुगन्ध हो ।।ध्रु.।।

मन में करुणा प्रेम सदा हो, मधुर योग्य व्यवहार करें
भेदभाव जड़मूल हटाकर, एक नया विश्वास भरें
धरती का हर छोर सँवारें, कहीं न कोई द्वन्द्व हों ।।1।।

निज कर्तव्य धर्म का पालन, दृढ़ता से करना है नित्य
फल की चिन्ता में ना उलझें, करते जाएँ सुन्दर कृत्य
नष्ट करे जो तिमिर जाल को, ऐसे सज्जन-वृंद हों ।।2।।

मेरे सब हैं मैं हूँ सबका, विराट चिन्तन सतत् चले
वृक्ष बीज में, बीज वृक्ष में, परिपूरक सद्भाव पले
प्राप्त करेंगे दिव्य धरोहर, जिसका आदि न अन्त हो ।।3।।

सहज भाव से निमित्त बनकर, हमें निरन्तर चलना है
पुण्य दायिनी गंगा के हित, हिमशिखरों सम गलना है
माँ-भारत के श्री चरणों में, जन्म हमारा धन्य हो ।।4।।

मनुष्य की पहचान उसके विचारों से होती है।

58. विश्व सुमंगल...

भारत की धरती से प्रगटी - विश्व सुमंगल भावना
सभी के सुख की कामना ।।ध्रु.।।

वसुधा को माना परिवार
समग्रता से किया विचार
लाँघ दिये सारे वन पर्वत, चली अखण्डित साधना ।।1।।

वायु, जल, अग्नि और धरती
कण-कण में नवजीवन भरती
ऋषि मुनि आत्मलीन हो करते, दिव्य ज्ञान आराधना ।।2।।

हरेक का वैशिष्ट्य निराला
अगणित मोती एक ही माला
धर्म, अर्थ और काम, मोक्ष की, तत्वनिष्ठ दृढ़ धारणा ।।3।।

प्राप्त करेंगे लक्ष्य महान्
करना है जन जन का त्राण
ध्येय समर्पित सिद्ध शक्ति की, करना नित्य उपासना ।।4।।

मनुष्य की पहचान उसके विचारों से होती है।

संस्कृत-गीत

विषयानुक्रमणिका

गीत संख्या	पृष्ठ संख्या
1. जय भारत जननी	70
2. अमृतस्य पुत्रा वयम्	71
3. एहि रे समर्पयेम	72
4. भारतधरणीयं मामकजननीयम्	73
5. मृदपि च चन्दनम्	74
6. वन्दे भारतमातरम्	75
7. जयतु जननी	76
8. भारतधरणी	77
9. सादरं समीहताम्	78
10. कृत्वा नवदृढ़संकल्पम्	79
11. हिमगिरेः श्रृंगम्	80
12. मनसा सततं स्मरणीयम्	81
13. देवि देहिनो बलं	82
14. राष्ट्ररक्षणम	83
15. प्राणपणनस्याऽभिलाषा (सरफरोशी की तमन्ना)	84
16. विज्ञान गीतम्	85
17. देववाणी–गीतम्	86
18. जय जय हे भगवति	87
19. संस्कृतं बोधकं भारतं भूतले	88
20. भाति में भारतम्	89
21. वीरताया धरा	90
22. एकं सद् बहुधा विलोक्यते भारतम्!	91
23. मदीयकविते! कुरुष्व गानम्	92
24. भारतं भारतीयं नमामो वयम्	93
25. देशो ददाति नः सर्वस्वम्	94
26. वन्दे सदा स्वदेशम्	95
27. जयत्वियं वसुन्धरा	96
28. भारत–वसुन्धरा	97
29. भारतं वन्दे	98
30. वेदवाणीं नमः	99
31. भजे भारतम्	100

1. जय भारत जननी

भारतमाता बुधजनगीता
निर्मलगंगा–जलपूता
शिरसि विराजित–हिमगिरिमुकुटम्
चरणे हिन्दु–महोदधि–सलिलम्
जघने शस्य–लता तरु–वसनम्
जय भारतजननी ॥१॥

ऋषिवर–घोषित–मन्त्र–पुलकिता
कविवर–गुन्थित–पावन–चरिता
धीर–वीर–नृप–शौर्य–पालिता
जय भारतजननी ॥२॥

मनसि मे सदा तव पदयुगलम्
संस्कृत–संस्कृति–सतत–चिन्तनम्
भाव–राग–लय–ताल–मेलनम्
जय भारतजननी ॥३॥

भावार्थ–इस गीत में कवि ने भारतभूमि की गीता से तुलना करते हुए प्रशंसा/स्तुति की है कि हे ! भारतमाता आप हिमालय को मुकट में, महासागर को चरणों में, फसल एवं वृक्षों को वस्त्रों के रूप में धारण किये हुए हैं। महान ऋषियों, कवियों, धर्मवान वीरों, राजाओं ने आपके चरित्र की गाथा को यशस्वी बनाया है। यही मधुर संस्कृति का गुणगान चारों दिशाओं में होता रहे।

2. अमृतस्य पुत्रा वयम्

अमृतस्य पुत्रा वयं
सबलं सदयं नो हृदयम्॥

गतमितिहासं पुनरुन्नेतुं
युवसंघटनं नवमिह कर्तुम्
भारतकीर्तिं दिशि दिशि नेतुं
दृढसंकल्पा विपदि विजेतुम् ॥१॥

ऋषिसन्देशं जगति नयेम
सत्त्वशालिनो मनसि भवेम।
कष्टसमुद्रं सपदि तरेम
स्वीकृतकार्यं न हि त्यजेम ॥२॥

दीनजनानां दुःखविमुक्तिं
महतां विषये निर्मलभक्तिम्॥
सेवाकार्ये सन्ततशक्ति
सदा भजेम भगवति रक्तिम् ॥३॥

भावार्थ—इस रचना में कवि ने अपने आप को भारतमाता का अमृत पुत्र होने की कल्पना की है। वह अपनी भारतमाता से उसका पुरातन सर्वश्रेष्ठ इतिहास की गाथा, यशोगान, संसार में सर्वत्र फैलाने की प्रार्थना करता है। आपदाओं, विपदाओं से न डरकर ऋषियों का सन्देश अखे भूमण्डल में फैलाने की शक्ति देने की प्रार्थना करता है। इस भूमि पर विचरण करने वाला दीनहीन जनों की सेवा रूपी कार्य करते रहने का संकल्प लिया है।

3. एहि रे समर्पयेम

एहि रे ऽऽ
एहि रे समर्पयेम मित्र! मातृचरणयोः
तनुतृणं धनचयं, भवतु रुधिरतर्पणम्।
किं नु पश्यसि त्वदीय–मातृ–वदन–म्लानतां
किमु ह्रिया, त्यज भियं, विक्लवः किमर्पण ॥एहि रे॥
मलयमारुतस्त्वदीयस्वागतं विद्यास्यति
सनातनी परम्परा प्रेरिका भविष्यति।
भवेम धन्यजीविनः समानचिन्तका वयं
चल पुरः, सह मया, समाश्रय ध्रुवां धृतिम् ॥एहि रे॥
वीरसूः शूरभूः स्थैर्यधैर्यभूरियं
सखे न भीरुभूरियं न भोगलालसास्पदम्।
नरोऽप्यवाप्तुमर्हतीह देवता–समानतां
स्मर चिरं, भर धियं, साधयेम विक्रमम् ॥एहि रे॥
राष्ट्रमुद्धर्तुमेहि ध्येय–साधनव्रत!
मन्युरस्तु बलिपशुः कार्यदीक्षितो भव।
धर्मसक्त कर्मनिष्ठ ऋषिकुलोभ्द्भव सखे

भावार्थ—इस कविता में कवि अपने मित्र को आह्वान करता है कि लज्जा, भय, कायरता को त्याग कर समस्त धन–मन–तन को माँ भारती को अर्पण करना है। अपने समर्पण एवं चिन्तन की तुलना मलय पर्वत की दृढ़ता, सनातन परम्परा को प्रेरिका मानकर आगे बढने की सलाह देता है। वह अपने मित्र को इस भारत राष्ट्र के उत्थान व उद्धार हेतु धर्मपरायण, कर्मनिष्ठ अपने ऋषि बनाने की सर्वस्व समर्पण के लिए आह्वान करता है।

4. भारतधरणीयं मामजननीयम्

भुवमवतीर्णा नाकस्पर्धिनी
भारतधरणीयं, मामकजननीयम्
शिरसि हिमालय–मुकुट–विराजिता
पादेजलधिजलेन परिप्लुता
मध्ये गंगापरिसरपूता
भारतधरणीयं, मामकजननीयम् ॥भुवमवतीर्णा॥

काश्मीरेषु च वर्षति तुहिनम्
राजस्थाने प्रदहति पुलिनम्
मलयस्थाने वाति सुपवनः
भारतधरणीयं, मामकजननीयम् ॥ भुवमवतीर्णा ॥

नानाभाषि–जनाश्रय–दात्री
विविध–मतानां पोषणकर्त्री
नानातीर्थ–क्षेत्रसावित्री
भारतधरणीयं,मामकजननीयम् ॥भुवमवतीर्णा॥

पुण्यवतामियमेव हि नाकः
पुण्यजनानां रुद्रपिनाकः
पुण्यपराणामाश्रयलोकः
भारतधरणीयं, मामकजननीयम् ॥भुवमवतीर्णा॥

भावार्थ—इस कविता में कवि भारत देश की विशेषताओं का वर्णन करते हुए इस भूमि को अपनी धरती माँ कहा है। सिर मुकुट हिमालय धारण किये इस देवी के सागर चरण पखार रहा है मध्य में माँ गंगा अपने पवित्र जल से सबको ज्ञान का अमृत पिला रही है। कहीं बर्फ, तो कहीं रेत, तो दक्षिण में शीतल पवन को गति करते हुए देख रही है। अनेक बोली की भाषा, बहुल सम्प्रदायों, मान्यताओं को धारण करने वाली इस भारतमाता की भूमि पर अनेक तीर्थ हैं। स्वर्ग के समान इस पवित्र धरती को कवि संसार का सर्वश्रेष्ठ पुण्य भूमि मानता है।

5. मृदपि च चन्दनम्

मृदपि च चन्दनमस्मिन् देशे ग्रामो ग्रामः सिद्धवनम्।
यत्र च बाला देवीरूपा बालाः सर्वे श्रीरामाः॥
हरिमन्दिरमिदमखिलशरीरम्
धनशक्ती जनसेवायै
यत्र च क्रीडायै वनराजः
धेनुर्माता परमशिवा॥
नित्यं प्रातः शिवगुणगानं
दीपनुतिः खलु शत्रुपरा॥ ॥मृदपि॥

भाग्यविधायि निजार्जितकर्म
यत्र श्रमः श्रियमर्जयति।
त्यागधनानां तपोनिधीनां
गाथां गायति कविवाणी
गंगाजलमिव नित्यनिर्मलं
ज्ञानं शंसति यतिवाणी ॥मृदपि॥

यत्र हि नैव स्वदेहविमोहः
युद्धरतानां वीराणाम्।
यत्र हि कृषकः कार्यरतः सन्
पश्यति जीवनसाफल्यम्
जीवनलक्ष्यं न हि धनपदवी
यत्र च परशिवपदसेवा ॥मृदपि॥

भावार्थ—इस कविता में कवि ने भारतभूमि पर रहने वाले सभी स्त्री–पुरुषों को देवी व रामरूप में अलंकृत किया है। यहाँ कवि ने खुद कर्म करके ही भाग्य निर्माता होने की प्रेरणा दी है। किसान, जवान, साधु संन्यासी की तपस्या की प्रशंसा की है।

6. वन्दे भारतमातरम्

वन्दे भारतमातरं वद, भारत। वन्दे मातरम्
वन्दे मातरं, वन्दे मातरं, वन्दे मातरम्॥

जन्मभूरियं वीरवराणां त्यागधनानां धीराणाम्
मातृभूमये लोकहिताय च नित्यसमर्पितचित्तानाम्।
जितकोपानां कृतकृत्यानां वित्तं तृणवद् दृष्टवताम्
मातृसेवनादात्मजीवने सार्थकतामानीतवताम् ॥१॥

ग्रामे ग्रामे कर्मदेशिकास्तत्त्ववेदिनो धर्मरताः
अर्थसंचयस्त्यागहेतुको धर्मसम्मत कामस्त्विह।
नश्वरबुद्धिः क्षणपरिवर्तिनि काये, चात्मन्यादरधीः
जातो यत्र हि स्वस्य जन्मना धन्यं मन्यत आत्मानम् ॥२॥

मातस्त्वत्तो वित्तं चित्तं स्वत्वं प्रतिभा देहबलम्
नाहं कर्ता, कारयसि त्वं, निःस्पृहता मम कर्मफले।
अर्पितमेतज्जीवनपुष्पं मातस्तव शुभपादतले
नान्यो मन्त्रो नान्यचिन्तनं नान्यद्देशहिताद्धि ऋते ॥३॥

भावार्थ—इस कविता में भारतमाता की वन्दना करते हुए प्रत्येक मनुष्य (भारतवासी) के कल्याण की कामना की है। सर्वाश में सभी वस्तुओं को प्रदान करने वाली इस भारतमाता के चरणों में पुष्प अर्पित किये हैं।

7. जयतु जननी

जयतु जननी जन्मभूमिः पुण्यभुवनं भारतम्।
जयतु जम्बू–द्वीपमखिलं सुन्दरं धामामृतम्।
पुण्यभुवनं भारतम्॥

धरित्रीयं सर्वदात्री शस्यसुफला शाश्वती।
रत्नगर्भा कामधेनुः कल्पवल्ली भास्वती।
विन्ध्य–भूषा सिन्धु–रशना शिखा–हिमगिरि शर्मदा।
रम्य–गंगा–यमुनया सह महानद्यथ नर्मदा।
कर्म–तपसां सार्थ–तीर्थं प्रकृति–विभवालंकृतम् ॥जयतु...॥

आकुमारी–हिमगिरेर्नो लभ्यते सा सभ्यता।
एक–मातुः सुताः सर्वे भाति दिव्या भव्यता।
यत्र भाषा–वेष–भूषा–रीति–चलनैर्विविधता।
तथाप्येका ह्याद्वितीया राजते जातीयता।
ऐक्य–मैत्री–साम्य–सूत्रं परम्परया सम्भृतम् ॥जयतु...॥

आत्मशिक्षा–ब्रह्मदीक्षा–ज्ञानदीपैरुज्ज्वलम्।
योग–भोग–त्याग–सेवा–शान्ति–सुगुणैः पुष्कलम्।
यत् त्रिरंग ध्वजं विदधत् वर्षमार्षं विजयते।
सार्वभौमं लोकतन्त्रं धर्मराष्ट्रं गीयते।
मानवानां–प्रेमगीतं विबुध–हृदये झंकृतम् ॥जयतु...॥

–हरेकृष्णमेहेरः

भावार्थ–यहाँ इस कविता में कवि भारतमाता को कल्पवृक्ष की भाँति तेजस्वी मानकर प्रशंसा व स्तुति करता है। कन्याकुमारी से लेकर हिमालय तक की सभ्यता की देवी भारतमाता का वन्दन करता है। तिरंगा झण्डे को विजय धारण का प्रतीक बताया है।

८. भारतधरणी

सर्वेषां नो जननी
भारतधरणी कल्पलतेयम्
जननी–वत्सल–तनय–गणैस्तत्
सम्यक् शर्म विधेयम् ॥ध्रुवम्॥

हिमगिरि–सीमन्तित–मस्तकमिदम्
अम्बुधि–परिगत–पार्वम्
अस्मज्जन्मदमन्नदमनिशं
श्रौतपुरातनमार्षम् ॥१॥

विजनितहर्षं भारतवर्षं
विश्वोत्कर्षनिदानम्
भारतशर्मणि कृतमस्माभिः
नवमिदमैक्यविधानम् ॥२॥

भारतहित–सम्पादनमेव हि
कार्यं त्विष्टविपाकम्
भारतवर्जं न किमपि कार्यं
निश्चितमित्यस्माकम् ॥३॥

भारतमेका गतिरस्माकं
नापरास्ति भुवि नाम।
सर्वादौ हृदयेन च मनसा
भारतमेव नमाम ॥४॥

–राधानाथराय्

भावार्थ–यहाँ कवि ने भारत को ही सब संसार की उन्नति का कारण माना है। प्राचीन वेदों के ज्ञान को धारण करने वाली भारत माता के शीश पर हिमालय व पैरों में समुद्र का प्रक्षालन बताया है। भारत की सेवा ही एकमात्र लक्ष्य बताया है।

९. सादरं समीहताम्

सादरं समीहताम् वन्दना विधीयताम्
श्रद्धया स्वामातृभू–समर्चना विधीयताम्॥

आपदो भवन्तु वा, विद्युतो लसन्तु वा
आयुधानि भूरिशोऽपि मस्तके पतन्तु वा
धीरता न हीयतां, वीरता विधीयतां
निर्भयेन चेतसा पदं पुरो निधीयताम् ॥सादरं॥

प्राणदायिनी मुदा त्राणदायिनी सदा
इयं सुधाप्रदायिनी शक्तिमुक्तिभक्तिदा
एतदीयवन्दने सेवनेऽभिनन्दने
साभिमानमात्मनो जीवनं प्रदीयताम्॥ ॥सादरं॥

—श्री वासुदेव द्विवेदी शास्त्री

भावार्थ—यहाँ इस कविता में कवि ने अपनी भारतमाता की बड़े आदर भाव के साथ सेवा करने का संकल्प दोहराया है उन्होंने भारतमाता को अमृत, शक्ति व भक्ति सभी का प्रदाता बताया है इस प्रकार प्रत्येक भारतवासी को अपने कर्त्तव्य का पाठ पढ़ाया है।

10. कृत्वा नवदृढ़संकल्पम्

कृत्वा नवदृढ़संकल्पम्
वितरन्तो नवसन्देशम्
घटयामो नवसंघटनम्
रचयामो नवमितिहासम्

नवमन्वन्तरशिल्पिनः
राष्ट्रसमुन्नतिकांक्षिणः
त्यागधनाः कार्यैकरताः
कृतिनिपुणाः वयमविषण्णाः ॥कृत्वा॥

भेदभावनां निरासयन्तः
दीनदरिद्रान् समुद्धरन्तः
दुःखवितप्तान् समाश्वसन्तः
कृतसंकल्पान् सदा स्मरन्तः ॥कृत्वा॥

प्रगतिपथान्नहि विचलेम
परम्परां संरक्षेम
समोत्साहिनो निरुद्वेगिनो
नित्यनिरन्तरगतिशीलाः ॥कृत्वा॥

भावार्थ—यहाँ कवि ने प्रत्येक भारतवासी को कर्त्तव्य परायण बनने की सलाह दी है। नया दृढ़ संकल्प, नया इतिहास रचने की आवश्यकता पर जोर दिया है। भेदभाव को त्यागकर अहर्निश अपने देशवासियों की सेवा का पाठ पढ़ाया है।

11. हिमगिरेः श्रृंगम

हिमगिरेः श्रृंगम् देवनदीं गंगाम्
मनसि निधाय हि अनुभवाम्
अनुपममुत्तुंगं भावमनुपममुत्तुंगम्॥

दिव्य—सनातन—संस्कृतिः
यतो हि वेदपुराणानि।
हिन्दोरुन्नत्यवनत्योः
सदृशनिऽगिरिशिखराणि।
भीरुमनस्स्वपि धीरस्वभावं
जनयेयुर्हिमभवनानि ॥हिमगिरेः॥

तं सुरलोकमतिक्रम्य
अवतीर्णा या भागीरथी।
भारतमातुः संगेन
पुण्या जाता भाग्यवती।
हिन्दूदेशे प्रतिजनमनसः
पावनकारिणी पुण्यवती ॥हिमगिरेः॥

पराजयोऽपि सोपानं
धैर्य विजयस्य निदानम्
गच्छतु दुःखित—बन्धुभ्यो
वक्तुं धैर्य—समाधानम्।
मातुः गौरवपरिरक्षायै
निष्ठं तनुहृद्धनप्राणम् ॥हिमगिरेः॥

—श्री नारायणभट्टः

भावार्थ—इस कविता में कवि ने हिमालय की चोटी व गंगा नदी को मन में धारण करते हुये अद्भुत धैर्य को धारण करते हुये दुःखी भाइयों के दुःख दूर करने का संकल्प लेने एवं इसके गौरव को धारण करने को कहा है। यहाँ कवि का मानना है कि यदि आप भारतमाता के मुकुट हिमालय का ध्यान करते हैं गंगा देवनदी को मन में धारण करते हैं तो आपको अपने ऊँचे चरित्र का ज्ञान होगा।

12. मनसा सततं स्मरणीयम्

मनसा सततं स्मरणीयम्
वचसा सततं वदनीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥लोकहितं॥

न भोगभवने रमणीयम्
न च सुखशयने शयनीयनम्
अहर्निशं जागरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥मनसा॥

न जातु दुःखं गणनीयम्
न च निजसौख्यं मननीयम्
कार्यक्षेत्रे त्वरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥मनसा॥

दुःखसागरे तरणीयम्
कष्टपर्वते चरणीयम्
विपत्तिविपिने भ्रमणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥मनसा॥

गहनारण्ये घनान्धकारे
बन्धुजना ये स्थिता गह्वरे
तत्रा मया संचरणीयम्
लोकहितं मम करणीयम् ॥मनसा॥

भावार्थ—इस कविता में कवि परमात्मा से मनसा, वाचा, कर्मणा अच्छे कार्यों में प्रवृत्त होने की शक्ति की कामना करता है।

13. देवि देहिनो बलं

देवि देहिनो बलं
धैर्य वीर्य संबलं
राष्ट्र मान वर्धनाय
पुण्य कर्म कौशलं ॥देवि देही॥

चण्ड मुण्ड नाशिनि
ब्रह्म शांति वर्षिणि
तेजोसाते जातं नाशं
आसु दुःख यामिनिं
भातु धर्म भास्करं
सत्य सौर्य भास्वरं
आर्य शक्ति पुष्टमस्तु
भारतम् निर्गलम ॥देवि देही॥

साधु वृन्द पालिके
विश्व धात्रि कालिके
दैत्य दर्प ताप ताप
कालिके करालिके
रक्ष आर्य संस्कृतिं
वर्धयार्य संहतिं
वेदमंत्रपुष्टमस्तु
भारतम् समुल्तुलम् ॥देवि देही॥

भावार्थ—इस कविता में कवि भारतमाता को शक्ति का रूप मानकर प्रार्थना करता है। दुर्गा माँ के रूप में, कालिका रूप में भारत वर्ष को सदैव उन्नति को प्राप्त होने की प्रार्थना की है।

14. राष्ट्ररक्षणम्

रक्षणं–रक्षणं राष्ट्ररक्षणम्।
रक्षणं–रक्षणं देशरक्षणम्
रक्षणम् ...ऽऽऽऽ राष्ट्ररक्षणम्–2

गणतन्त्रमस्माकमेतद् भारतं प्रचक्षते,
देवतात्मास्वरूपं महद् रूपे दृश्यते।
युक्त आर्यमर्यादया देशेषु यः पूज्यते,
नौमि भारतभू धरां वसुन्धरा विराजते। (१)

वन्दनीयः पूजनीयो जगत्यस्मिन् सर्वदा,
अस्ति–अस्य भूमिर्वसुप्रदायिनी सदा।
सभ्यतायाः सूर्योदयः नासीत् संसारे ,यदा,
विश्वगुरुगौरवेण यो ज्ञायते तदा (२)

यत्र हरिणा कृष्णेन गीताज्ञानामृतं दत्तम्,
रामचन्द्रप्रभुणा लोकधर्म तत्र स्थापितम्।
पूजायोग्या नियमाः सन्ति अस्याः संस्कृते.,
धारणीयो माननीयो धर्मः तत्र वर्तते (३)

ज्ञानस्य प्रकाशो भवेत् तमो अपसरः,
वर्धतां वैभवमस्य कीर्तिः सुकीतिश्च।
भवगुरु स्वर्णविहंगः अयं भवेत् पुनः,
एहि–एहि अस्य पुनस्संगठनं कुर्मः। (४)
रक्षणम् ऽऽऽऽ राष्ट्ररक्षणम्
रक्षणम् ऽऽऽऽ देशरक्षणम्

– नरपत कविया,
संस्कृताचार्यः

भावार्थ—यहाँ कविता के माध्यम से कवि भारतभूमि को संसार की सर्वश्रेष्ठ माना है। विश्वगुरु के गौरव से जानी जाने वाली भारतभूमि पर श्री कृष्ण का गीता ज्ञान व प्रभु राम का अवतार हुआ है। कवि भगवान से इस धरती पर अन्धकार हटे व प्रकाश एवं ऐश्वर्य बढ़े और भारत पुनः सोने की चिड़िया बने।

15. प्राणपणनस्याऽभिलाषा

(सरफरोशी की तमन्ना)

प्राणपणनस्याभिलाषा सांप्रतम् मम मानसे।
प्रेक्ष्यतांन्तु कियद् बलं, हन्तुर्भुजायां स्फूर्जति॥ १॥

राष्ट्रधर्म बलिप्रदायिन्! तुभ्यमर्पित जीवनम्।
शत्रुसंसदि शौर्यचर्चाऽद्य, त्वदीयोज्जृम्भते॥ २॥

प्रेमवीथीनिदर्शकाः त्याज्यं न लक्ष्यं वर्त्मनि।
इष्टगन्तव्ये सुदूरे नेतृकर्मरसो भृशम्॥ ३॥

आह्वयन् बध्यस्थले बधिकः पुन श्चाक्रोशति।
प्राणदानस्याभिलाषाऽद्यापि कस्मिन् शिष्यते॥ ४॥

युक्तकाले ननु सकृत्य गुंजयिष्यामो नभः।
साम्प्रतं न विकत्थीनीयम् किं नु हृदये वर्तते॥ ५॥

उत्सुकत्वं पूर्ववत् हृदये न सम्प्रति कामना।
उत्कटेच्छा राष्ट्रहितबलिदानमात्र बिस्मिले॥ ६॥

पीडयस्व यथेच्छमेव पश्य सुष्ठु परन्त्विदम्।
कोऽपि बलिदानेप्सुरन्यस्ते सभायां मादृशः॥ ७॥

भावार्थ—इस कविता में कवि ने राष्ट्र धर्म के लिए सब कुछ बलिदान करने की इच्छा व्यक्त की है। सब कुछ सहन कर प्रेममार्ग (राष्ट्र प्रेम) को दिखाने का ही लक्ष्य प्राप्ति की भगवान से प्रार्थना की है।

16. विज्ञान गीतम्

भारत राष्ट्रे परमर्षीणां विज्ञानं विजयताम्,
विज्ञानं विजयताम्।

पांचभौतिकं रहस्यजातं ऋतम्भराप्रज्ञया वीक्षितम ।
निगमागम मन्त्रेषुसंचितं पुरातनं यत् यत् सनातनम् ॥१॥
पुनरपि विद्योतताम्।

अन्तरिक्षगतभगणज्ञानं, जलनिधितलगतसृष्टिज्ञानम ।
परमाणूनामन्तर्ज्ञानं, सकललोकहितसुखार्थमनिशम् ॥२॥
भुवने प्रकाशताम्।

कणादसुश्रुतपतंजलीनां, ब्रह्मगुप्तभास्करादिकानाम् ।
ज्ञाननिधीनां विबुधवराणां, सत्यसनातनतत्वदर्शिनाम् ॥३॥
परम्परा वर्धताम्।

भारतस्य यत् जगत्गुरुपदं अनादिसिद्धं भूषणास्पदम् ।
राष्ट्रमण्डले पूजनास्पदं विद्याव्रतपालनैरखण्डम् ॥४॥
पुनरपि संस्थाप्यताम्।

भावार्थ—इस कविता में कवि ने भारतभूमि के परम ऋषियों के द्वारा ऋतम्भरा प्रज्ञा प्राप्त करने को बताया है। प्राचीन शास्त्रों अंतरिक्ष के ग्रहों व जल राशि में छुपे हुए ऋषि ज्ञान के विषय में ऋषियों के द्वारा कठिन तपस्या के फलस्वरूप प्राप्त ज्ञान जिससे हमारा भारत जगत् गुरु कहलाया। वह स्थान पुनः संस्थापित करने की इच्छा जाहिर की है।

17. देववाणी-गीतम्

गेहे गेहे संस्कृतभाषा भवतात् पुनरपि वाणी।
राष्ट्रकुलानां धर्मधराणां ज्ञानवतां कल्याणी
दिव्यगीतायाः इमं सन्देशसारं श्रूयताम्।
कर्मभोगो निश्चितः सत्कर्मणा पथि गम्यताम्॥
गेहे गेहे————————— ॥१॥
दिव्यभारतवर्षमेतत् लोककल्याणे रतम्।
धर्ममोक्षार्थाभिकामानां प्रयासे प्रेरितम्॥
गेहे गेहे————————— ॥२॥
भ्रातृभावो दृष्यतामिह भारतीये जीवने।
सन्तु सर्वे प्राणिनः सुखिनः सदा संवर्धने॥
गेहे गेहे————————— ॥३॥
हिन्दुदेशे वीरपुत्रैः पुण्यपुरूषैर्भूयताम्।
न्याय–करूणा–प्रेम–समता–सत्कथासंगीयताम्॥
गेहे गेहे————————— ॥४॥

भावार्थ—इस कविता में कवि संस्कृत भाषा को समस्त देशवासियों व ज्ञानी मनुष्यों की भाषा बनने की कामना की है। दिव्य गीता संस्कृत भाषा में लिखी गई है। इसलिए इस भाषा को हम जानकर ही सत्कर्म के मार्ग पर चल सकते हैं। हमारे सम्पूर्ण भारतीय जीवन में भाई चारा बढ़े सभी प्राणी सुखी हों हर जगह न्याय करुणा व प्रेम की सत्कथा का गुणगान हो और यह तभी हो सकता है जब संस्कृत जन–जन की भाषा बने।

18. जय जय हे भगवति

जय जय हे भगवति सुरभारति तव चरणौ प्रणमामः।
नादब्रह्ममयि जय वागीश्वरि शरणं ते गच्छामः
त्वमसि शरण्या त्रिभुवनधन्या वन्दित–सुर–मुनि–चरणा
नवरसमधुरा कवितामुखरा स्मित–रूचि–रूचिराभरणा।।
जय जय हे........................(1)

असीना भव मानसहंसे कुंद–तुहिन–शशि धवले
हर जडतां कुरू बुद्धिविकासं सित पंकज तनु विमले।।
जय जय हे........................(2)

ललितकलामयि ज्ञानविभामयि वीणा–पुस्तक–धारिणि
मतिरास्तां नःतव पदकमले अयि कुण्ठाविषहारिणि
जय जय हे........................(3)

–डॉ नारायणभट्ट

भावार्थ–इस कविता में कवि भारतमाता को प्रणाम करते हुए उसकी शरण में जाना चाहता है। वह भारतमाता की कल्पना चंद्रमा की शीतल चाँदनी में खिले हुए चमेली के फूल से करता है और अपनी बुद्धि की जड़ता को दूर करने की प्रार्थना करते हुए माँ सरस्वती की उपासना करता है।

19. संस्कृतं बोधकं भारतं भूतले

रत्नगर्भा धरा सुस्मिता श्यामला,
दिव्यतीर्थास्तटाः पर्वताः सिन्धवः।
निर्झराः वाटिकाश्चात्र देवालयाः,
भव्यमेतत्प्रियं भारतं भूतले ॥१॥

वेदशास्त्राणि साहित्यकाव्यानि वा,
यत्र यच्छन्ति लोकाय सत्प्रेरणम्।
रम्यरामायणं श्रीमहाभारतं,
राष्ट्रमेतद्वरं भारतं भूतले ॥२॥

यत्र देवी सती शारदा जानकी,
चानुसूया शिवा द्रौपदी पद्मिनी।
सन्ति सर्वा इमाः वत्सलाः मातरः,
शक्तियुक्तं शिव भारतं भूतले ॥३॥

रामकृष्णौ हरी वर्धमानो जिनो,
गौतमः शंकरः पाणिनिर्नानकः।
श्री दयानन्द साधुश्च देशे–भवन,
देशिकानामिदं भारतं भूतले ॥४॥

भारतीयाः स्वभावेन शान्तिप्रियाः,
ज्ञानविज्ञानसेवारताः कर्मठाः।
मानवी भावना भासते संस्कृतौ,
सत्यसंशोधकं भारतं भूतले। ॥५॥

भावार्थ–इस कविता में कवि ने भारतमाता की बहुत ही सारगर्भित स्तुति, प्रार्थना व उपासना की है। कवि ने भारतमाता के गर्भ से रत्न, दिव्य तीर्थ, दिव्य पर्वत और समुद्र तथा झरने व बगीचों के होने की स्तुति की है। वेद शास्त्र, काव्य शास्त्र, रामायण, महाभारत के इस भारतभूमि पर प्रगट होने की प्रशंसा की है। सावित्री, सरस्वती, सीता से लेकर अनुसूया, पार्वती, पद्मिनी, द्रोपदी आदि माताओं के दिव्य गुणों के साथ–साथ माता पद्मिनी का भी बहुत ही लयबद्ध गुणगान किया है। इस धरती की आभा को चमकाने वाले रामाकृष्ण, महावीर, गौतम बुद्ध, शंकराचार्य, पाणिनी व श्री दयानन्द जैसे महाराष्ट्र नायकों एवं साधु चरित्रों का बखान भी बखूबी किया है। भारतीयों के शीतल चरित्र एवं कर्म पराण्यता का उल्लेख करते हुए समस्त भू–तल पर सत्य संशोधक के रूप में प्रस्तावना की है।

20. भाति मे भारतम्

भाति मे भारतम्, भाति मे भारतम्।
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम् ।। ध्रुवकम्।।
मानवामानितं दानवाबाधितं
निर्जराराधितं सज्जनासाधितम्।
पण्डितैः पूजितं पक्षिभिः कूजितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।। (१)

यस्य संदृश्य संदृश्य शोभा नवा
यस्य संस्मृत्य संस्मृत्य गाथा नवाः।
रोमहर्षो नृणां जायते वै सतां
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।। (२)

यच्च विश्रामभूमिर्मतं प्राणिनां
यस्य चित्ते प्रभ्तोऽवकाशस्तथा।
यत्र चागत्य गन्तुं न कोऽपीच्छुको
भूतले भाति तन्मामकं भारतम्।। (३)

पण्डितैर्योद्धभिर्वाणिजैः कार्मिकैः
शस्त्रिभिः शास्त्रिभिवर्णिभिर्गोहिभिः।
वानप्रस्थैश्च संन्यासिभिर्मण्डितं
भूतले भाति मेऽनारतं भारतम्।। (४)

भावार्थ—इस कविता में भारत की उन्नति की कामना करते हुए कवि परमात्मा से समस्त भू—मण्डल में भारत व भारतीयों के सुखी होने की कामना की है। प्राणियों के विश्राम भूमि, ह्रदय में जिसकी उदारता हो ऐसे भारतीयों व भारतभूमि के होने की कामना की है।

21. वीरताया धरा

राष्ट्ररक्षाविधौ यास्ति काष्ठा परा
वन्द्यते सा मया वीरताया धरा,

स्वाभिमानादृते नास्ति किञ्चित्प्रियं देशसेवाविधौ दीयते जीवनम्
गौरवायैव देशस्य यैरर्प्यते स्वं मनः, स्वा तनुः स्वं धनं सन्ततम्।

वीरपुत्रप्रसूः धीरता निर्भरा
वन्द्यते सा मया वीरताया धरा

यत्र राणाप्रतापस्य पादध्वनिः मातृभूः वक्षसि स्पन्दते सर्वदा
यत्र हम्मीरदेवस्य शस्त्रच्छटा दिक्षु विद्योतते सर्वदा मोददा

शत्रुविध्वंसयज्ञेषु बद्धादरा
वन्द्यते सा मया शूरताया धरा,

यत्र भक्तिस्वरूपा हि मीरा पपौ कृष्णप्रेमामृतं, ब्रह्मसायुज्यदम्
पाययन्ती सुधा भक्तिसङ्गीतिभिः पावयन्तीस्थिता या हि भूमण्डलम्

श्रीहरेः प्रेमपीयूषपाने रता
वन्द्यते सा मया भक्तिपूर्णाधरा

संस्कृतिर्भारतीया सदा पाल्यते संस्कृतं जीवनञ्चापि संधार्यते
धर्मकर्मान्विता यत्समाजप्रथा विश्रुता विश्वमञ्चे यदीया कथा

— डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'

भावार्थ—इस कविता में कवि ने भारत को वीरों की भूमि के रूप में मनन किया है स्वाभिमान को जीते हुए राणाप्रताप, हमीर देव की शौर्य गाथाओं को बताते हुए कवि ने इस वीर भूमि को वंदन किया है। मीरा के कृष्ण प्रेम भक्ति रस को धारण करने वाली इस भूमि को वंदन किया है। भारतीयों की संस्कृति को धारण करने वाले इस धर्म और कर्म युक्त समाज की प्रथा का गुणगान किया है।

22. एकं सद् बहुधा विलोक्यते भारतम्!

एकं सद् बहुधा विलोक्यते भारतम्।
बहुधा सच्चैकं विराजते भारतम्।
एकमखाण्डभिन्नमस्ति मे भारतम्।
रम्यमस्ति सुरवन्द्यमस्ति मे भारतम्।।१।।

एकं सद्..............।

यदि पादेऽस्य कदापि निविशते कण्टकम्
निखिलतनौ पीडनं भवति मर्मान्तकम्।
यदि वेदना शिरसि समुदेति सदा ध्रुवं
व्यथते सकलतनौ मे निखिलं भारतम् ।।२।।

एकं सद् ....।

भिन्नमस्तु भाषाभूषासु पदे पदे
भिन्नमस्तु लोकाचारेषु पदे पदे।
भिन्न्मस्तु पूजापद्धतिषु पदे पदे
आत्मन्येकमभिन्नमस्ति मे भारतम् ।।३।।

एकं सद् ....।

कोटिकोटिजनताचेतस्सु विराजितम्।
नित्यनवीनोत्सवपर्वावलि – राजितम्।
विश्वबन्धुता–जिजीविषा–विस्तारकम्।
जगतो हृदयं जयति जगति मे भारतम्।।४।।

एकं सद् ....।

वीक्ष्य समृद्धिं यन्त्रोद्योगनां भृशम्।
वीक्ष्य समृद्धिं कृषिसम्पत्त्या वा भृशम्।
वीक्ष्य समृद्धिं ज्ञानकलादीनां भृशम्,
मोमुदीति मनसा निखिलं मे भारतम् ।।५।।

एकं सद् ....।

– डॉ. रमाकान्त शुक्ल

भावार्थ–इस कविता में कवि ने भारत की एक सत्य को अनेक प्रकार से दिखने का वर्णन किया है। पैर में चुभे एक काँटे की पीड़ा को समस्त शरीर की पीड़ा का वर्णन करते हुए कवि ने अनेकता में एकता का होना वर्णित किया है। करोड़ों–करोड़ों लोगों के चित्त में विराजित नवीन उत्सवों, पर्वों को विश्वबन्धुता के लिए होना बताया है। कारखानों की विपुल समृद्धि को कृषि संसाधनों की बहुल उन्नति को व ज्ञान कला की उन्नत समृद्धि को देखकर अपनी भारत भूमि की प्रशंसा की है।

23. मदीथकविते! कुरुष्व गानम्

सरस्वती पादपद्मसेवा
यदीयमास्ते परं हि लक्ष्यम्।
बुधाग्रगाणामतन्द्रितानां,
मदीयकविते! कुरुष्व गानम्।।1।।
सुखं धनं स्नेहबन्धनानि
स्वदेशसौख्याय ये त्यजन्ति।
हुतात्मनां नित्यमेव तेषां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम।।2।।
परोपकारव्रतं पवित्रं
सदैव ये पालयन्ति हृष्टाः।
सुपूजितानां नृणां हि तेषां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम।।3।।
रिपोः करान्मोचयाम्बभूवुः
स्वमातरं भारतावनिं ये।
विशिष्य तेषां नृणां समेषां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम्।।4।।
मनुष्यतां रक्षिंतु स्वयत्नै–
रनुक्षणं शोधतत्पराणाम्।
प्रबुधवैज्ञानिकव्रजानां
मदीयकविते! कुरुष्व गानम!।।5।।

—डॉ. रमाकान्त शुक्ल

भावार्थ—इस कविता में कवि ने भारत माता का गुणगान करने की अपनी कविता से प्रार्थना की है। वह कहता है कि मेरी कविता माँ सरस्वती का वंदन कर बुद्धिमान उत्साहियों का गुणगान कर अपने राष्ट्र के सुख, धन, प्रेम के लिए अपना सर्वस्व बलिदान करने, परोपकार करने वाले मेरे पूज्यजनों एवं शत्रुओं के हाथों से मेरी भारतमाता को मुक्त करने वाले वीर, धीर व गंभीर पुरुषों का गुणगान कर। कवि अपनी कविता से मानवता की रक्षा के लिए खोजी, बुद्धिमान्, वैज्ञानिक साधुओं का अभिनन्दन करने की बड़ी विनम्र शब्दों में प्रार्थना करता है।

24. भारतं भारतीयं नमामो वयम्

सागरं सागरीयं नमामो वयम्,
काननं काननीयं नमामो वयम्।
पावनं पावनीयं नमामो वयम्,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्

पर्वते सागरे वा समे भूतले,
प्रस्तरे वा गते पावनं संगमे।
भव्यभूते कृतं सस्मरामो वयम्,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्॥ १॥

वीरता यत्र जन्माश्रिता संगता,
संस्कृति मानवीया कृता वा गता।
दैवसम्मानितं पावनं सम्पदम्,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्॥ २॥

कोकिलाकाकली माधवामाधवी,
पुष्पसम्मानिता यौवनावल्लरी।
षट्पदानामिह मोददं गुञ्जनम्,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्॥ ३॥

पूर्णिमा चन्द्रिका चित्तसम्बोधिका,
भावसंवर्धिका चास्ति रागात्मिका।
चञ्चलाचुम्बितं पावनं प्राङ्गणम्,
भारतं भारतीयं नमामो वयम्॥ ४॥

भावार्थ—इस कविता में कवि ने भारत व भारतीयों को नमन किया है। इस धरती पर रहने वाले सागरवासियों, वनवासियों को स्मरण कर कवि इनमें उपस्थित वीर, धीर, गंभीर व मानवीय संस्कृति को रचने वालों को नमन किया है। कोयल की मधुर स्वर व भँवरों के गुंजों की आवाज, पुष्पों से सुसज्जित बेलें जो भँवरों के गुंजन से प्रसन्नता भर देती है। पूनम की चाँदनी में चित्त को जाग्रत करने वाली सत्वभावों सहित प्रेम को बढ़ाने वाली इस भारत भूमि व इस पर रहने वालों को नमन करता है।

25. देशो ददाति नःसर्वस्वम्

देशो ददाति नः सर्वस्वम्।
वयमपि किञ्चिद्ददातुमिच्छेम्
सूर्यो ददाति नवप्रकाशः,
वायुः ददाति नवीनजीवनम्।
बुभुक्षाम् नः दूरीकर्तुम्,
भवति कृषिः अस्यां धरित्र्याम।
निहितं हितं परेषामपि च,
कार्यमीदृशं सदा कुर्याम॥ १॥

पथिकेश्यः तप्तदुपहर्याम्,
वृक्षैः सदा दीयते छाया।
सदा दीयते पुष्पसुगन्धिः,
अस्मभ्यं पुष्पाणां माला।
जीवनेन त्यागीवृक्षाणां,
वयमपि परेषां हितं कुर्याम॥ २॥

येऽशिक्षिताः पाठयेम् तान्,
ये मूकाः वाणीं यच्छेम।
पृष्ठेगतानग्रे कुर्याम,
तप्तधरित्र्ये जलंयच्छेम।
परिश्रमस्य दीपं प्रज्ज्वाल्य,
नवप्रकाशं कर्तुमिछेम्॥ ३॥

भावार्थ—इसमें कवि ने भारत राष्ट्र के द्वारा हमें सब कुछ देने के बदले हमें भी पुनः राष्ट्र को देने की बात कही है। सूर्य का प्रकाश वायु द्वारा जीवन प्रदान करने वाले इस धरती पर खेती होती है जिससे परायों का हित होता है, ऐसा ही हम कार्य करें। गर्म दोपहर में वृक्षों के द्वारा छाया, पुष्पों के द्वारा सुगन्ध और हमारे लिए माला ये देश हमें देता है, तो हम भी और भला करने के लिए कुछ त्याग करें। कवि कहता है कि अनपढ़ को पढ़ा कर, गूगों को वाणी प्रदान कर, पिछड़ों को आगे लाकर, गर्म धरती को जल से सींचने का परिश्रम कर हम नवीन प्रकाश का दीपक जलाएं। ऐसी वह भारतीयों से कामना करता है।

26. वन्दे सदा स्वदेशम्

गंगा पुनाति भालं रेवा कटिप्रदेशम्।
वन्दे सदा स्वदेशम् एतादृशं स्वदेशम।।

काशी प्रयाग मथुरावृन्दाटवीविशालाः।
द्वारावतीसुकाञ्चिविदिशादितीर्थमालाः।।
सम्भूष्यन्ति कामं यस्य प्रशान्तवेषम्।
वन्दे सदा स्वदेशम् एतादृशंस्वदेशम्।।1।।

सलिलं सुधामधुरितं पवनोऽपि गन्धवाही।
चरितं विकल्पकलितं धर्मो दयावगाही।।
यत्प्रांगणं शबलितं कौतूहलैरशेषम्।
वन्दे सदा स्वदेशम् एतादृशं स्वदेशम्।।2।।

गायन्ति यस्य देवाश्शुभगीतकानि नित्यम्।
सर्वे भवन्तु सुखिनो यस्यैतदेव कृत्यम्।।
अभयप्रदोपदेशाः शमयन्ति पापलेशम्।
वन्दे सदा स्वदेशम् एतादृशं स्वदेशम्।।3।।

अचलो नु देवताऽऽत्मा वसुधाऽपि रत्नगर्भा।
कुलिशायते यदस्थि प्रचुरं वनी सुदर्भा।।
केचिन्नमन्ति गिरिजां केचिच्च शालुवेशम्।
वन्दे सदा स्वदेशम् एतादृशं स्वदेशम्।।4।।

अद्यापि यस्य नीतिर्विस्मापयत्यनल्पम्।
उद्घोष्य विश्वशान्तिं भावञ्च मित्रकल्पम्।।
वन्दे ध्वजं त्रिवर्णं वन्देऽगृहीतकेशम्।
वन्दे सदा स्वदेशम् एतादृशं स्वदेशम्।।5।।

अभिराज डॉ. राजेन्द्र मिश्र

भावार्थ—इस कविता के माध्यम से कवि अपने मातृभूमि का वंदन करता है। गंगा, नर्मदा के किनारों पर बसे काशी, प्रयाग, वृन्दावन, द्वारिका, कांचि आदि तीर्थों को कवि वन्दन करता है। अपने देश के अमृतमय पानी सुगन्धित वायु, सुन्दर और धर्म की दया को बहाने वाला मानकर अद्भुत कौशलों से सुशोभित इस देश को कवि वन्दन करता है। देवों के द्वारा शुभगीत (सभी सुखी हों) का उपदेश देने वाले पाप मात्र का शमन करने वाले मैं इस देश के तिरंगे ध्वज को आजादी का प्रहरी मानकर वन्दन करता हूँ।

27. जयत्वियं वसुन्धरा

जयत्वियं वसुन्धरा जयत्वियं वसुन्धरा।
रघोरियं यदोरियं कुरोरियं वसुन्धरा
अनन्तलोकतोऽपि शान्तिदायिनी गरीयसी।
पुरन्दरस्य वज्रतोऽपि पुष्कलं दृढीयसी
वयं यदीयरक्षणे निरन्तरं पुरस्सराः।
तुषारशैलमाण्डिता जयत्वियं वसुन्धरा॥ १॥
न हिन्दवो महामदा न नानकावलम्बिनः।
न शाक्तशैवतान्तिका न जैनबौद्धयोगिनः
परस्परं पृथङ्मता न वर्ततेऽन्यथा धरा।
ऋतम्भरा सनातनी जयत्वियं वसुन्धरा॥ २॥
मुखे जयध्वनिस्तथा करे त्रिवर्णकध्वजः।
पदद्वये दृढा गर्तिगले विचञ्चलस्त्रजः
वयं प्रभञ्जनोपमा अरातिरोधतत्पराः।
शकारिशौर्यरक्षिता जयत्वियं वसुन्धरा॥ ३॥
न दुर्नयं सहामहे न दुर्नयो विचीयते।
स्वराष्ट्रगौरवोचितं हि केवलं विद्यीयते
वयं प्रयाणगत्वराः प्रतिक्षणं प्रसृत्वरा।
सुरैरपि प्रभाविता जयत्वियं वसुन्धरा॥ ४॥
वयं हि लोकतान्त्रिका ऋतैकपक्षपातिनः।
सुहृत्तमाः परन्तु वैरिणां कृतेऽतितापिनः
न भेददर्शिनोवयं न चापि वृत्तमत्सराः।
त्रिलोकतो महीयसी जयत्वियं वसुन्धरा॥ ५॥

भावार्थ—इस कविता में कवि ने इस देश की इस भूमि को रघु की, यदु की, कुरू की भूमि मानकर इसके सदैव विजय होने की कामना की है। बर्फीले पर्वतों से सुशोभित सभी को शान्ति देने वाली, नानक को मानने वाली, जैन बौद्ध योगियों को सजाने वाली बुद्धिमान् सनातनी परम्परा को बढ़ाने वाली इस भारत भूमि की जय हो, की कामना करता है। देवों को प्रभावित करने वाली, अपना गौरव ही सब कुछ है ऐसा मानने वालों की ये भूमि जहाँ सुहृदयी लोग रहते हैं भेदभाव रहित सुस्वभाव लोगों के रहने वाली तीनों लोकों में इस महान् भूमि की जय हो।

28. भारत-वसुन्धरा

जनहितकरणी भवनिधितरणी संस्कृतिपरम्परा
त्रिभुवनकमनी जगति विजयते भारत–वसुन्धरा
भवकल्याणी परमपुराणी श्रुतिवाणी महिता।
भुविविख्याता जगदवदाता दिव्यकला सहिता
दिशिदिशि सुजला प्रतिकणममलाश्यामलसस्यधरा।
त्रिभुवनकमनी जगति विजयते भारत–वसुन्धरा॥ १॥
धवलहिमालय मुकुटाभरणं शिरसा धृतं यया।
जलनिधिनूपुरशिञ्चितचरणौ ध्रियते सदा तया
हृदिशुचिसरला मनसि च तरला मानवता मुखरा।
त्रिभुवनकमनी सदा विजयते भारत–वसुन्धरा॥ २॥
नवविज्ञानं गतमज्ञानं प्रतिदिनमत्र धृतम्।
गुणसंज्ञानं द्वितसन्धानं सततमिहैव कृतम्
शुभगतिवरणी हितरतिधरणी शुभकर्मसु चतुरा।
त्रिभुवनकमनी जगति विजयते भारत–वसुन्धरा॥ ३॥
प्रकृतिपेशला शुचि सुकोमला मे स्वदेशधरणी।
भुवनवन्दिता लोकनन्दिनी विश्वरागकरणी
निजसुतजनपरिपालनचतुरा रिपुकुलजीवहरा।
त्रिभुवनकमनी जगति विनयते भारत–वसुन्धरा॥ ४॥
भुवि निजजननीरक्षाकरणे वयं बद्धकक्षाः।
उद्धतरिपुदल शिरः कर्तने वयं सदा दक्षाः
नवलसहस्त्राब्दिम् प्रविशते मे जननीगुणमधुरा।
त्रिभुवनकमनी जगति विजयते भारत–वसुन्धरा॥ ५॥

भावार्थ—संसार का कल्याण करने वाली मार्गदर्शन, दिव्यकला से युक्त, लोगों की हितकारी शुद्ध जल व वायु को धारण करने वाली, त्रिलोकी में कामना योग्य यह हमारी भारत भूमि है। इसने अपने सिर पर हिमालय, मुकुट के रूप में, समुद्र को पायलसम धारण किया है। यहाँ पर हमेशा अज्ञान का नाश व विज्ञान का धारण होता है। यहाँ पर शुभ कर्म करने वाले त्रिलोकों में चाहने योग्य मनुष्य पैदा होते हैं, इसलिए भारत भूमि संसार में सदैव जीतती है। इस धरती पर लोक में पूजित शत्रुओं का सिर काटने वाले अपनी माँ की रक्षा करने वाले वीर पुरुष ही वंदनीय हैं और कवि इस प्रकार अपनी इस भारतभूमि के सदा विजय होने की प्रार्थना करता है।

29. भारतं वन्दे

वन्दे भारतम्
वन्दे भारतम्
भारतं वन्देऽ
नारतम्
भारतं वन्दे
वन्दे भारतम्
वन्दे भारतम्

सितहिमगिरिमुकुटं खलु धवलम्,
जलनिधि–जल–पावित–पद–युगलम्।
कुवलयवनमिव विमलं गगनम्,
प्रवहति दिशि वारि सुविमलम्।
कोटि–कोटि–
जनतानुपालकं
भारतं वन्दे
भारतं वन्देऽ
नारतम्
वन्दे भारतम्
वन्दे भारतम्॥ १॥

सुललित–पद–बहुला बहुभाषाः,
बहुविध–नव–कुसुमानां हासाः।
दिनकर–शशि–शुभ–कान्तिविकासः,
प्रतिदिननवविज्ञानविलासः।
धरणीतले
कुटुम्बधारकं
भारतं वन्देऽ
नारतम्
भारतं वन्दे
वन्दे भारतम्॥ २॥

–डॉ. इच्छाराम द्विवेदी 'प्रणव'

भावार्थ–भारत को वन्दन करते हुए कवि इस कविता में हिमालय, समुद्र, निर्मल आकाश, निर्मल जल से सिंचित इस भूमि को वन्दन करता है। बहुत सुन्दर शब्दों अनेक भाषाओं व अनेक प्रकार के फूलों की हँसी को धारण करने वाली इस सूर्य व चन्द्रमा की प्रकाशित पृथ्वी जल पर समस्त परिवारों को धारण करने वाली इस सुखी भारत का कवि वन्दन करता है।

30. वेदवाणीं नमः

पश्य देवस्य काव्यं यदास्तेऽमृतं
यज्जराबाधितं नो भवेज्जातुचित्।
अस्य संज्ञास्ति वेदः सदा पावनीं,
वेदवाणीं नमो वेदवाणीं नमः॥ १॥

अस्ति माता मदीया धरेयं तथै,
वास्म्यहं तत्सुतस्तत्सपर्यापरः।
घोषणेयं यदीयास्ति तां पावनीं,
वेदवाणीं नमो वेदवाणीं नमः॥ २ ॥

राष्ट्रमास्तां सुपुष्टं समृद्धं सदा,
त्यागभोगौ सखायौ भवेतां तथा।
देशनेयं यदीयास्ति तां पावनीं,
वेदवाणीं नमो वेदवाणीं नमः॥ ३॥

वारिवाहः सुकाले समागच्छतात्,
सन्तुगावश्च पुष्टाः रामस्तास्तथा।
मार्गणेयं यदीयास्ति तां पावनीं,
वेदवाणीं नमो वेदवाणीं नमः॥ ४॥

मा जलानां तरुणां च हिंसा कुरु
द्युतखेलां परित्यज्य कर्षं कुरु।
मानवं या दिशन्ती, श्रुतिं तां मुदा,
वेदवाणीं नमो वेदवाणीं नमः॥ ५॥

''नैकधर्मास्तथानेकवाचो नरा,
मातरं भूमिमेनां सदा रक्षत।''
राष्ट्रियां वैश्विकीमेकतां तन्वतीं,
वेदवाणीं नमो वेदवाणीं नमः॥ ६॥

डॉ. रमाकान्त शुक्ल

भावार्थ—इस कविता में कवि ने वेदवाणी को नमन किया है। कवि कहता है कि बुढ़ापे को रोकने वाला अमर कार्य वेदवाणी को मैं नमन करता हूँ। यह वेदवाणी मुझे अपना पुत्र मानकर अपने माता की तरह धारण करती है, यह हमेशा ही राष्ट्र को बलवान, धनवान, त्याग व पवित्र बनने का उपदेश देती है। इस पावन वेदवाणी को सभी लोग अच्छी प्रकार से गुणगान करें, इसको सुनकर पानी व वृक्षों का नाश न करें, प्रसन्न होकर सभी लोग इस वेदवाणी को नमन करें। हे! देश व विश्व की एकता को बढ़ाने वाली को मैं नमन करता हूँ।

31. भजे भारतम्

सदाज्ञानविध्वंसकारी मनोज्ञः,
समालोक्यते यत्र वाणी–विहारः।
विधत्ते स्वमित्रं च यः प्राणिमात्रं,
भजेऽहं मुदा भारतं तं स्वदेशम्॥ १॥

कुटुम्बं धरित्री दया यस्य मित्रं,
मनुष्यत्वसेवा यदीयोऽस्ति धर्मः।
असत्यं च शत्रुः समस्तेऽपिलोके,
भजेऽहं मुदा भारतं तं स्वदेशम्॥ २॥

स्वकीयां बुभुक्षां पिपासां नियम्य,
सदा रक्षिता येन भीताः प्रपन्नाः।
यमाहुर्विदग्धास्तथा शान्तिदूतं,
भजेऽहं मुदा भारतं तं स्वदेशम्॥ ३॥

न मम्लौ यदीयं मुखं निःस्वतायाम्,
विमूढं च चित्तं च वित्तोपलभे।
सदा दानशीलश्च यो याचकेभ्यो,
भजेऽहं मुदा भारतं तं स्वदेशम्॥ ४॥

कला कालिदासस्य बाणस्य वाणी,
रवीन्द्रस्य गीतिर्विवेकस्य वाणी।
लता–तानसेन–स्वरा यत्र मुग्धाः,
भजेऽहं मुदा भारतं तं स्वदेशम्॥ ५॥

अतीतं भविष्यत्तथा वर्तमानं,
जगत्प्रेरणादायकं वै यदीयम्।
चतुर्वर्गसिद्धिं दिशन् यः प्रसिद्धो,
भजेऽहं मुदा भारतं तं स्वदेशम्॥ ६॥

डॉ. रमाकान्त शुक्ल

भावार्थ—इस कविता में कवि भारत के गुणों का गुणगान करता है वह अंधकार को नष्ट करने वाली प्राणी मात्र में मित्रता को धारण करने का उपदेश करने वाली सभी को प्रसन्न करने वाली सब की भूख–प्यास मिटाने वाली, विद्वानों को पोषने वाली इस भारत भूमि को नमन करता है। कवि कालिदास की कला, बाणभट्ट की वाणी, रबीन्द्रनाथ के गीत, लता मंगेशकर व तानसेन के स्वर जिस भूमि के उज्ज्वल चरित्र उस निज देश भारत को मैं नमस्कार करता हूँ। संसार को प्रेरणा देने वाले चारों पुरुषार्थ की सिद्धि के उपदेश में लगनशील है उस देश की प्रसन्नता को मैं हृदय से स्वीकार करता हूँ।